हिंदी पाठ्यपुस्तक-8

1. समर्पण

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** सुमन, समर्पित, ऋण, अकिंचन, आशीष, अर्पित, क्षण-क्षण, तृण-तृण

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कविता में देशभक्ति और मातृभूमि भारत माता के प्रति प्रेमभावना से समर्पित होने की बात कही गई है।
2. पंक्ति का तात्पर्य सिर पर आशीर्वाद की कृपा बहुत है।
3. कविता में गाँव, घर, आँगन से क्षमा माँगी गई है।
4. कवि मातृभूमि का ऋण अपने ऊपर मानता है।
5. कवि मोह के बंधन तोड़ता है।

- **लिखित**

1. मातृभूमि भारत-माता के चरण की धूल माथे पर मलने की बात कविता में कही गई है।
2. कवि माँ का ऋण अपने मन, अपने प्राण और शरीर को समर्पित करके उतारना चाहता है।
3. कवि मातृभूमि पर अपना सब कुछ न्योछावर करना चाहते हैं। वे विस्तार से बताते हैं कि वे अपना मन और प्राण समर्पित करना चाहते हैं। शरीर के रक्त की एक-एक बूँद अर्पित करना चाहते हैं व अपना जीवन और मस्तक भी देश के लिए देने को तत्पर हैं, ताकि मातृभूमि की सेवा कर सकें।
4. यहाँ नीड़ से तात्पर्य है कि कवि के घर, परिवार और सुख-सुविधा के संसार से है। कवि अपने घर और जीवन की खुशियों के एक-एक तिनके को देश के लिए समर्पित कर रहे हैं।
5. कवि अपने हाथों में तलवार लेना चाहते हैं, क्योंकि वे अपनी मातृभूमि की रक्षा कर सकें और देश की रक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर सकें।

- **प्रत्यास्मरण**

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'उमंग' के समर्पण नामक पाठ से उद्धृत है। इसके कवि श्री रामावतार त्यागी जी हैं।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि अपनी मातृभूमि भारतमाता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या– हे मातृभूमि! मुझ पर तुम्हारे बहुत उपकार हैं। तुम्हारे कर्ज़ मुझ पर बहुत अधिक हैं, इसकी तुलना में मैं बहुत दीन-हीन और तुच्छ हूँ, मेरे पास ऐसा कुछ नहीं जो तुम्हारे उपकारों का बदला चुका सकूँ, किन्तु फिर भी निवेदन है कि मैं भाल सजाकर थाल लाऊँ, आपके चरणों में भेंट करने आऊँ, तो आप मुझ पर दया करके मेरे इस बलिदान को स्वीकार कर लेना अर्थात् मैं देश के लिए अपना बलिदान देने को तत्पर हूँ।

- **अपनी समझ से**

1. (क) भारत माता का
2. (घ) समर्पण का
3. (ग) समर्पण के लिए
4. (ख) ढाल को
5. (ग) भारतमाता की चरण-धूल

- **सोच-समझकर**

1. कवि पंक्ति के माध्यम से कवि अपनी असीम श्रद्धा और समर्पण को व्यक्त कर रहा है। कवि का मानना है कि उसने अपना तन, मन और प्राण तो देश को दे ही दिये हैं, लेकिन मातृभूमि के उपकार इतने महान हैं कि वह अभी कुछ और भेंट करूँ। कवि कहता है कि मैंने अपना मन, अपने प्राण और अपने शरीर के रक्त की एक-एक बूँद समर्पित कर दी है। इसलिए मेरी इच्छा है कि हे देश की धरती! मैं तुम्हें इन सब के अलावा भी कुछ और भेंट करूँ।
2. कवि स्वयं को अकिंचन (गरीब/तुच्छ) इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि मातृभूमि के विराट उपकारों और ऋण की तुलना में उनके पास मौजूद हर चीज अपर्याप्त लगती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. कवि ने अपने सभी सपनों, जिज्ञासाओं, कल्पनाओं और जीवन के हर पल को देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है।
2. कवि गाँव द्वार, घर और आँगन से क्षमा माँगता है। कवि देश सेवा के लिए अपने घर, परिवार के मोह को तोड़ना चाहता है इसके लिए क्षमा माँगता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. अकिंचन
2. तृण-तृण
3. प्राण
4. तोड़ता
5. चरण

- **सुमेलन**

(क)	(ख)
माँ	ऋण
चरण	धूल
सुमन	चमन
नीड़	तृण-तृण
कमर	ढाल
शीश	आशीष

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. हम नई शिक्षा नीति को अपनाकर, हरित क्रान्ति एवं श्वेत क्रांति द्वारा, वृक्षारोपण एवं स्वच्छता द्वारा देश को विकसित राष्ट्र बना सकते हैं।
2. देश-प्रेम तथा देशभक्ति का हमारे जीवन में अधिक महत्व है। हमें अपने देश तथा देश की भक्ति करके ही इस ऋण को चुका सकते हैं।
3. देश सेवा करने के लिए हम सेना के रूप में एवं शिक्षा तथा विभिन्न क्षेत्रें में योगदान दे सकते हैं।
4. कवि अपना सर्वस्व देश को समर्पित करके भी असंतुष्ट है, क्योंकि मातृभूमि के इतने उपकार हैं कि भारत माता के विराट उपकारों के बदले में कवि के पास हर वस्तु अपर्याप्त व तुच्छ है।

भाषा आधारित – शब्दों के तुकांत

1. (क) भाल — थाल
   (ख) तन — मन
   (ग) सुमन — चमन
   (घ) देरी — मेरी
   (ङ) अर्पित — समर्पित
   (च) अकिंचन — निवेदन
2. **पर्यायवाची शब्द**
   (क) तलवार – खड्ग, कटार
   (ख) धरती – पृथ्वी, धरा
   (ग) सुमन – पुष्प, प्रसून
   (घ) चमन – बगीचा, उपवन
3. **समास का नाम**
   (क) क्षण-क्षण – अव्ययी भाव समास
   (ख) मोह-बन्धन – तत्पुरुष समास
   (ग) घर-आँगन – द्वन्द्व समास
   (घ) चरण-धूल – तत्पुरुष समास
4. (क) निवेदन - प्रार्थना
   वाक्य प्रयोग– कवि ईश्वर की प्रार्थना करता है।
   (ख) क्षमा – माफ करना
   वाक्य प्रयोग– कवि अपने घर, परिवार और आँगन से क्षमा चाहता है।
   (ग) अर्पित – बलिदान
   वाक्य प्रयोग– कवि अपने शीश को अर्पित करना चाहता है।
   (घ) भाल – मस्तिष्क
   वाक्य प्रयोग– कवि अपने भाल को थाल में सजाकर भारत माता को न्योछावर करना चाहता है।
   (ङ) अकिंचन – गरीब, बेसहारा
   वाक्य प्रयोग– मैं बहुत ही अकिंचन (दीन-हीन) तथा तुच्छ प्राणी हूँ।

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

2. तिनकों के साए

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** जरूरत, परवरिश, कारोबार, वजीफा, सर्टिफिकेट, स्थगित, कल्पना, बीहड़

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अज्जू, तनु और उसकी माँ पिता के आने की राह देखते थे।
2. अज्जू के पिताजी अफ्रीका कारोबार करने गये थे।
3. बड़ा होकर अज्जू इन्जीनियर बनना चाहता था।
4. तनु के विवाह के गहने–रुपये और वस्त्र अफ्रीका (नैरोबी) से आये थे।
5. नैरोबी पहुँच कर अज्जू एक वृद्ध व्यक्ति से मिला।

- **लिखित**

1. नैरोबी से बड़ा करुणा और दर्द भरा पत्र आया था। वह पत्र अस्पताल में लिखा गया था। "रोग काबू से बाहर है, इसलिए डॉक्टर ने ऑपरेशन की सलाह दी है।" लगता है, चंद दिनों का ही मेहमान हूँ। उसके बाद तुम लोगों का क्या होगा? इस कारण परिवार के सभी लोग परेशान हो गए।
2. घर में भेजे गए पत्र में पिता ने अज्जू के बारे में बताया, अब वह पूरे बारह साल का हो गया है। छठी कक्षा में अव्वल आने पर उसे वजीफा मिलेगा। तनु अब अठारह साल पार कर रही है। उसकी भी शादी करनी है। "इस समय तो नहीं, हाँ अगले साल तनु की शादी पर अवश्य आऊँगा।" दहेज की चिंता न करना। कहीं अच्छे वर की खोज करना।
3. जिले में प्रथम स्थान पाकर हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने पर अज्जू के लिए इनाम में अफ्रीका से कीमती कैमरा आया। गर्म सूट का कपड़ा आया। सुंदर घड़ी आई और एक मर्मस्पर्शी लंबा पत्र आया।
4. पढ़ाई पूरी करने के बाद हारकर इस बार अज्जू ने ही अफ्रीका जाने का कार्यक्रम बना लिया। अकस्मात् पहुँचकर पापा को चौकाने की योजना बनाई। उसके मन में एक गहरी उत्कंठा थी कि पापा उसे देखकर कितने चकित होंगे।
5. वृद्ध व्यक्ति ने अज्जू को उसके पिता के बारे में बताया कि मैं तुम्हारे पिता का जिगरी दोस्त हूँ। बहुत लंबे समय तक हम साथ–साथ रहे। उसी ने मुझे भारत से यहाँ बुलाया था। मुझे सारा काम सिखाया। हमने साझे में व्यापार शुरू किया। नैरोबी की आज यह बहुत अच्छी फर्म है। यह सब उसी की बदौलत है। तुम्हारे पिता की मृत्यु आज से पंद्रह–बीस साल पहले हो गई थी, यह बात अगर तुम्हें पता चल जाती तो क्या होता? तुम अनाथ हो जाते। तुम इतने हौसले से पढ़ नहीं पाते।

- **प्रत्यास्मरण**

1. गद्यांश के अनुसार लोग बीहड़ वनों को एक अदृश्य डोर के सहारे पार कर जाते हैं।
2. युवक के पिता तो बहुत पहले ही गुजर गए थे।
3. वृद्ध कितने ही वर्षों से इसी दिन के इंतजार में था।
4. पुत्र ने जब वृद्ध को गले लगाया तो वह दीवार पर टँगे एक धुँधले चित्र को देखकर मुस्करा रहे थे।
5. वृद्ध ने युवक से कहा– अब तुम बड़े हो गये हो। अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बँटाओ। मेरा वचन पूरा हो गया, जो मैंने उसे मरते समय दिया था।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (ख)
5. (क)

● **सोच-समझकर**

1. कहानी के अनुसार, अज्जू की बहन को अच्छा वर इसलिए मिला, क्योंकि उसके पिता के मित्र ने परिवार को मृत्यु का समाचार छिपाकर उनके सारे कर्त्तव्य निभाए और एक अच्छा रिश्ता ढूँढ़ा। आज के समाज के परिप्रेक्ष्य में यह दर्शाता है कि घर परिवार की प्रतिष्ठा सामाजिक समर्थन और सही समय पर लिए गए निर्णय विवाह संबंधों को सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
2. पिता की मृत्यु के बाद भी उनके मूल्यों, आदर्शों और उनके मित्र द्वारा निभाई गई जिम्मेदारियों ने परिवार को टूटने से बचाया। पिता की अनुपस्थिति में भी उनके मित्र ने एक अभिभावक की भूमिका निभाई, जिससे परिवार को एक अदृश्य सहारा मिला और वे मुश्किल समय से निकल पाए।
3. अज्जू के पिता ने इसलिए कहा होगा, क्योंकि वे अपनी बीमारी या किसी अन्य विवशता के कारण स्वयं पत्र लिखने में असमर्थ थे, या वे अपनी स्थिति को छुपाना चाहते थे। यह उनकी लाचारी या अपने परिवार के प्रति चिंता को दर्शाता है।

● **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय है कि समय बहुत तेजी से बीतता है और किसी के लिए नहीं रुकता है।
2. कभी-कभी जीवन की बड़ी मुश्किलों से निकलने के लिए छोटी-सी मदद या उम्मीद की किरण (तिनकों का साया) ही काफी होती है।
3. यदि किसी व्यक्ति ने मरने से पहले किए गए वादे या जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, तो उसे संतुष्टि मिलती है।

● **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पत्र
2. चौंकाने
3. सो
4. खिलखिलाकर
5. मर

● **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

● **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि अज्जू के परिवार को पिता की मृत्यु का पता चल जाता तो वह अनाथ हो जाता और उसकी माँ जीते-जी घुट-घुटकर मर चुकी होती। उसका परिवार बिखर जाता। अज्जू की पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती तथा उसके सपने उसके दिल में ही रह जाते। बेसहारा होकर कर्ज के बोझ से दब गया होता तथा गलत संगति में पड़ जाता। यहीं कहानी का अंत हो जाता।
2. वृद्ध व्यक्ति ने जो किया, वह सही किया तथा उसका यही दायित्व था, क्योंकि उसने अपने मित्र को मरते समय यह वचन दिया था।
3. हमारे विचार से वह वृद्ध व्यक्ति अज्जू का पालक पिता अथवा अभिभावक ही था।
4. यदि हम अज्जू के स्थान पर होते तो वृद्ध व्यक्ति को धन्यवाद देते तथा उनका अपने पिता की तरह मान-सम्मान भी करते।

● **भाषा आधारित**

1. **शब्दों के लिंग बदलिए–**
   (क) पुरुष, (ख) धोबिन, (ग) माता, (घ) वृद्धा, (ङ) बेटा, (च) युवती।
2. **मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग**

   (क) उदास हो जाना

   वाक्य प्रयोग– कक्षा में कम नम्बर आने पर अजय का चेहरा मुरझा गया।

   (ख) बहुत तेज गति से जाना

   वाक्य प्रयोग– बालक का मन पंख लगाकर उड़ रहा है।

   (ग) बहुत खुश हो जाना

   वाक्य प्रयोग– अपनी माँ को देखकर बच्चों का चेहरा खिल उठा।

   (घ) मदद करना

   वाक्य प्रयोग– राधिका अपनी माँ का हाथ बँटाती है।

   (ङ) भावुक होकर रुलाई आना

   वाक्य प्रयोग– एक अदृश्य डोर के सहारे कहते-कहते उनका गला भर आया।

3. उपसर्ग मूलशब्द
(क) अ बोध
(ख) अ प्रवासी
(ग) अ दृश्य
(घ) वि लीन

4. **प्रत्यय छाँटिए–**
(क) ईय (घ) ई
(ख) इत (ङ) इक
(ग) ता (च) ई

● **क्रियाकलाप आधारित**
छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

3. अनोखा मुकदमा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

● **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्रदूषण, मह. ाराज, शिकायत, मछलियों, कहावत, जोहड़, रासायनिक, कुल्हाड़ी, संवाहक, पूर्ति।

पाठ आधारित

● **मौखिक**

1. दरबार में जल, वायु और प्रदूषण के विरुद्ध शिकायत की गई थी।
2. पाठ के अनुसार बाढ़ आने के लिए आम जनता जिम्मेदार है।
3. पाठ के आधार पर पानी नदी, तालाब, कुएँ तथा पहाड़ों पर पाया जाता है।
4. लोगों के अनुसार वायु गन्दगी, कूड़ा न फैलाए तथा आँधी बनकर अंधड़ न लाए।
5. वायु को मरे हुए पशु-पक्षी, गन्दगी तथा कारखानों से निकलती गैस प्रदूषित करती है।

● **लिखित**

1. वर्षा कम होने के दो कारण हैं–
(1) पहाड़ियों को काटकर समतल बनाना।
(2) वनों की कटाई व जंगलों को नष्ट करना।
2. कूड़ा-करकट, घर, विद्यालय, गली, मुहल्ले आदि को गंदा करता है तथा पानी में गन्दगी जाने से पानी एवं वायु दोनों को दूषित करता है।
3. जब हवा दूषित हो जाती है, तो वह प्राणहारी बन जाती है। जहरीली गैसें तथा गन्दा वातावरण ही हवा को प्रदूषित करता है।
4. पहाड़ पर बसे गाँव को बाढ़ में बह जाने का पानी ने कारण बताया कि मैं हमेशा देखकर चलता हूँ। इसलिए सदा ढलान की ओर जाता हूँ। कभी अपने आप ऊँची जगह नहीं चढ़ता हूँ। महाराज इनके गाँव के पास एक पहाड़ है। पहले उस पर बहुत से वृक्ष होते थे। जब में पहाड़ पर बरस कर नीचे उतरता था, तब वृक्ष-कुंजों से होकर नीचे आता था। पहाड़ से धीरे-धीरे नीचे उतर कर सीधे नाले में चला जाता था। अब वृक्षों को साफ कर दिया तथा घर और कारखाने बना लिए हैं। अब मैं पहाड़ से उतरता नहीं हूँ, लुढ़कता हूँ।
5. वायु ने कहा-कारखानों से निकलती गैस और गंदगी मुझमें घुल-मिल जाती है। मैं जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती हूँ। मुझे आज भी वह काला दिन याद है, जब भोपाल में एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझ पर सवार होकर दूर-दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग मौत के मुँह में चले गए थे।

● **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (ग)
2. (ग) 5. (घ)
3. (ख)

● **सोच समझकर**

1. हवा का बहना बंद होने पर सभी घुटन महसूस करने लगे, क्योंकि हवा जीवनदायिनी है।
2. जल पूजन के नाम पर लोग अवांछित वस्तुएँ नहर, नदी, कुएँ में फेंक कर जल को प्रदूषित करते हैं। पीने के पानी के तालाब में पशुओं को नहलाते हैं।

इस कारण तथा कारखानों का गन्दा पानी जल को प्रदूषित करता है। जल प्रदूषण एवं जल से होने वाली क्षति के लिए जल नहीं अपितु आमजन दोषी है। अपनी गलतियों को सुधारो तथा पानी को निर्मल एवं उपयोगी रहने दो। इसकी बचत करो।

3. हवा प्रदूषित होकर लोगों को क्षति पहुँचाती है। कारखानों से निकलता धुआँ और गैस तथा गन्दगी घुल-मिल जाती है। हवा जहरीली होकर रोगों की संवाहक बन जाती है। जहरीली गैस मिलाकर हवा को प्राणदायी से प्राणहारी न बनाएँ।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इनका आशय यह है कि हमें हवा में जहरीली गैस या अन्य प्रदूषक नहीं मिलाने चाहिए। प्राणदायी का अर्थ जीवन देने वाला और प्राणहारी का अर्थ जीवन लेने वाला होता है, इसलिए यह हवा को दूषित न करने का आग्रह करती है, ताकि वह जीवन के लिए हानिकारक न बन जाए।
2. यदि हम जल और वायु को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखेंगे, तो वे हमारे मित्र बने रहेंगे। एक स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ जीवन और खुशहाली सुनिश्चित करता है, जिससे हमारा जीवन सुखी और समृद्ध होता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. संवाहक
2. रक्षा
3. जोहड़
4. पहाड़ियों
5. घर-कारखाने

- **किसने किससे कहा**

किसने कहा?	**किससे कहा?**
एक व्यक्ति ने	हवा से
दूसरे व्यक्ति ने	जल से
राजा ने	व्यक्तियों से
एक व्यक्ति ने	जल से
मंत्री ने	हवा से

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि पानी नहीं होगा, तो हमारा जीवन निरर्थक हो जायेगा। पानी के बिना पानी पीना, नहाना, धोना, खाना बनाना सभी समाप्त हो जायेगा। हमारी दिनचर्या एवं जीना दुर्लभ हो जायेगा।
2. बरसात के पानी को तालाब के माध्यम से बचत करके तथा पीने के पानी को किसी टंकी अथवा हौद में जमा कर बचत कर सकते हैं।
3. यदि लोग साफ-स्वच्छ रहने की आदत न अपनाएँ, तो वह बीमारी के शिकार हो जायेंगे। जिसके परिणाम अधिक बुरे दिखाई देंगे।

- **भाषा आधारित**

(क) **कुर्सी** – महाराज, कुर्सी की महिमा समाप्त होती जा रही है। मुझे हर व्यक्ति चाहे अच्छी जगह हो, चाहे खराब जगह हर जगह पर खींचकर डाल देता है और मुझ पर सवार हो जाता है। वह मेरी हालत को नहीं देखता कि मुझमें वजन सहने की शक्ति है कि नहीं। मेरी हालत खस्ता हो जाती है। आज के समय में राजनीति का भी बुरा हाल है कुर्सी के चक्कर में कभी भी कहीं भी गोलियाँ तक चल जाती हैं। कुर्सी की इतनी होड़ लगी हुई है।

(ख) **पेड़**– अब लोगों ने वृक्षों का महत्व भुला दिया है। महाराज आप इन लोगों को समझाइए। यह पेड़ों को काटे नहीं बल्कि नये पेड़ अधिक से अधिक लगायें।

महाराज–पेड़ एक जीवित प्राणी है। इसे मानव के समान प्रकाश, खाना, पानी इन सभी चीजों की आवश्यकता है जिसका कोई भी ध्यान नहीं देता। पेड़ से फूल, फल तथा लकड़ी वस्तुएँ बनाने के काम में प्रयोग की जाती है।

2. **लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग**

(क) दोनों ओर से नुकसान

वाक्य प्रयोग– कर्ज चुकाने के लिए रमेश

ने घर बेचा, तो अब रहने के लिए छत नहीं है। सच में, इधर कुआँ, उधर खाई।

(ख) कम ज्ञानी में अहंकार अधिक होता है।

वाक्य प्रयोग– राहुल खुद तो परीक्षा में मुश्किल से पास हुआ है, लेकिन दूसरे को बुद्धू कह रहा है। सही कहा है, अधजल गगरी छलकत जाय।

(ग) अयोग्य को मूल्यवान वस्तु मिल जाना।

वाक्य प्रयोग– सुरेश के पास नौकरी के लिए न डिग्री थी न अनुभव, फिर भी मैनेजर की पोस्ट मिल गई, यह तो वही बात हुई कि अंधे के हाथ बटेर लग गई।

(घ) जिसका जो काम होता है, वही उसे कुशलता से कर सकता है।

वाक्य प्रयोग– अजय ने अपने अनुभवी मैकेनिक के बिना खुद ही कार का इंजन खोलने की कोशिश की तो कार ठीक होने के बजाय पूरी तरह बंद हो गयी। तभी किसी ने कहा-जिसकी बंदरी वही नचावे, और नचावे तो काटन धावे।

(ङ) गुण-अवगुण या अच्छे-बुरे के बीच कोई फर्क न किया जाए।

वाक्य प्रयोग– सरकारी दफ्तर में चोर और ईमानदार दोनों बराबर हैं, सचमुच वहाँ तो वही हालत है। अंधेर नगरी चौपट राजा।

3. (क) दुर् + उपयोग
   (ख) मनः + हर
   (ग) लोक + उक्ति
   (घ) परि + आवरण

4. **उचित विराम चिह्न लगाइए–**

   राजा– इस संबंध में आप लोगों को कुछ कहना है?

   (कोई कुछ नहीं बोलता है, सभी सिर झुका लेते हैं।)

   राजा– अभी तो सब कह रहे थे– हमारी सुनो, हमारी सुनो। अब हवा एवं जल की दलील सुनकर सबकी बोलती बंद हो गई। खैर, आपने अपनी शिकायत के प्रत्युत्तर में हवा का दुख सुन लिया है। वायु को दूषित होने से बचाना आपके ही हाथ में है। जल और वायु को मित्र बनाएँ और अपने जीवन को सुखी-समुन्नत करें।

- **क्रियाकलाप आधारित**

  1. जल चक्र बनाकर शिक्षक को दिखाएँ।

  2. एवं 3. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

4. बस की यात्रा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** जबलपुर, वयोवृद्ध, हिस्सेदार, सविनय, अवज्ञा, एकाएक, दयनीय, बियाबान, बलिदान, भावना।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक सहित पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें।
2. पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।
3. पाठ के अनुसार बस खूब वयोवृद्ध थी। उसकी हालत खस्ता थी।
4. यात्रा शुरू करने के बाद बस पहली बार पेट्रोल की टंकी में छेद होने के कारण रुकी।
5. लेखक ने पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी।

- **लिखित**

1. लेखक ने बताया कि बस बहुत पुरानी और जर्जर हालात में थी। बस के ढाँचे बहुत कमजोर हो चुके थे और लेखक को किसी भी हिस्से पर भरोसा नहीं था।

उन्हें लगा कि बस कभी भी खराब हो सकती है, जैसे- ब्रेक फेल होना या स्टीयरिंग का टूटना।

2. जो लोग लेखक और उसके मित्रों को छोड़ने आये थे, वे इस तरह देख रहे थे, जैसे अंतिम विदा दे रहे हों। उनकी आँखें कह रहीं थी- आना-जाना तो लगा ही रहता है, जो आएगा सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर।
3. लेखक ने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धा भाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफर कर रहे हैं।
4. इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा लगा, जैसे सारी बस ही इंजन है और लेखक इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे, इंजन चल रहा था। लेखक को लग रहा था कि हमारी उनकी के नीचे इंजन है।
5. लेखक को बस के अपने आप चलने पर हैरानी हो रही थी क्योंकि बस की हालत इतनी खराब थी कि उसका चलना असंभव लग रहा था।

   बस बहुत पुरानी और टूटी-फूटी थी, इसलिए लेखक को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह अपने आप चल भी सकती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख)
2. (घ)
3. (ख)
4. (क)
5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि बस बहुत पुरानी और जर्जर अवस्था में थी, मानो उसने सदियों का अनुभव प्राप्त कर लिया हो, यह एक व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी थी, जिसका अर्थ था कि बस इतनी अधिक चल चुकी थी कि उसके हर हिस्से में पुरानेपन और टूट-फूट के निशान स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।
2. उन्हें लगा कि जब बस का कोई भरोसा नहीं है कि वह कब और कहाँ रुक जाए, तो चिंता करने का कोई फायदा नहीं है और उन्होंने यात्रा को एक नियति मानकर स्वीकार कर लिया।
3. लेखक ने चलती हुई बस की तुलना सविनय अवज्ञा आंदोलन से इसलिए की क्योंकि बस के पुर्जे एक-दूसरे से असहयोग कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे आंदोलन में लोग शांतिपूर्वक सरकारी आदेशों का पालन करने से मना कर देते थे, बस का कोई भी हिस्सा ठीक से काम नहीं कर रहा था— कभी ब्रेक फेल हो जाते, कभी इंजन हिलता, कभी सीट बॉडी से अलग हो जाती। फिर भी बस चल रही थी, जो इस आंदोलन के शांतिपूर्ण विरोध के तरीके को दर्शाती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का आशय यह है कि मृत्यु के लिए कोई न कोई बहाना या कारण आवश्यक होता है, भले ही वह कितना भी छोटा क्यों न हो - लेखक ने यह टिप्पणी तब की जब बस एक सुनसान जगह पर रुक गई और उन्हें लगा कि यह बस उनकी मृत्यु का कारण बन सकती है और उन्हें इस दुनिया से जाने के लिए बस इसी बहाने की जरूरत थी।
2. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने बस कंपनी के हिस्सेदार के लालच और गैर-जिम्मेदाराना रवैये पर व्यंग्य किया है, बस की हालत अत्यंत खराब होने के बावजूद, हिस्सेदार उसे "फर्स्ट क्लास" बता रहा था, जिससे पता चलता है कि वह केवल पैसे कमाने में दिलचस्पी रखता था और यात्रियों की सुरक्षा की परवाह नहीं करता था।
3. बस इतनी बूढ़ी हो चुकी थी कि वह स्वयं चलने में असमर्थ थी और अन्य चलती हुई गाड़ियों को रास्ता देने के लिए कह रही थी। यह एक व्यंग्य है जो बस की चरमराती हालत और उसकी गतिहीनता को दर्शाता है, मानो वह अपनी उम्र पूरी कर चुकी एक वृद्ध महिला हो।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. गोद
2. सतना
3. छेद
4. इत्मीनान से
5. घिसा टायर

- **किसने किससे कहा**

किसने कहा?	**किससे कहा?**
वृद्ध बस ने	नई बस से
लेखक ने	हिस्सेदार से
कंपनी के हिस्सेदार	सवारियों से
लोगों ने सलाह दी	पाँचों युवकों से
डॉक्टर मित्र ने	लेखक से

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि बस जीवित प्राणी होती तो बोल सकती और अपने कष्टों और खराब हालत के बारे में कहती कि मेरे शरीर का अंग-अंग पीड़ा में डूबा हुआ है। मेरा लीवर खराब है तथा मेरे पैर भी जवाब दे रहे हैं।
2. छात्र स्वयं करें।
3. अपनी यात्रा के दौरान हमने ट्रेन, बस, ऑटो आदि का उपयोग किया लेकिन हमने पाया। कि जितना आनन्द पैदल चलने में है, उतना वाहन के द्वारा आराम नहीं है। हालांकि ट्रैन हमें आरामदायक लगी।

- **भाषा आधारित**

1. (क) स्+अ+व्+इ+न्+अ+य्+अ
   (ख) अं+त्+य्+ए+ष्+ट्+इ
   (ग) ल्+उ+भ्+आ+व्+अ+न्+ए
   (घ) व्+इ+श्+व्+अ+स्+अ+न्+ई+य्+अ
2. **मुहावरों व लोकोक्तियों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग**
   (क) जो पैदा हुआ, उसका अन्त जरूरी है। वह राजा हो या फकीर।
   वाक्य प्रयोग– इस संसार में जो पैदा हुआ है, उसका अन्त भी जरूरी है। चाहे वह राजा हो या रंक। यह विधि का विधान है।
   (ख) टाल-मटोल करना
   वाक्य प्रयोग– गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है। हम आगा-पीछा करने लगे।
   (ग) मृत्यु के निकट होना/बलिदान करना
   वाक्य प्रयोग– सैनिक जान हथेली पर रखकर देश की सेवा करते हैं।
3. **पर्यायवाची शब्द**

नृप	भूपति
गृह	आवास
जन-नायक	प्रतिनिधि
वृक्ष	तरु

4. **शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग**
   (क) अर्थ – धरती
   वाक्य प्रयोग – पृथ्वी के अन्दर रत्न भरे पड़े हुए हैं।
   (ख) अर्थ – के लिए निमित्त
   वाक्य प्रयोग – यह सारा धन अपनी बहन के निमित्त अर्पण किया है।
   (ग) अर्थ – प्रतीक्षा
   वाक्य प्रयोग – अरुण रेलवे स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार करने लगा।
   (घ) अर्थ – बुढ़िया
   वाक्य प्रयोग – जैसे कोई वृद्धा थक कर बैठ गई हो।
   (ङ) अर्थ – सुझाव
   वाक्य प्रयोग – बड़े बुजुर्गों की सलाह माननी चाहिए।

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

5. थोड़ी दूर और मंजिल है

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** संसृति, मंजिल, बटोही, निर्झर, विस्तृत, कंपन, प्रबल, प्यास, बढ़ते।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कविता में बटोही को थका हुआ बताया गया है।

2. प्यास और थकान के कारण यात्री के पैर आगे नहीं बढ़ते हैं।
3. झरने पहाड़ों का हृदय चीरकर बहते हैं।
4. मानव स्वयं को प्यासा कहकर छल करता है।

- **लिखित**

1. पथिक को जब प्यास लगती है, तब उसके प्राण प्यास से तड़पते हैं।
2. कवि ने मंजिल के बारे में बताते हुए कहा है कि हे! पथिक, बस तेरा गन्तव्य स्थान थोड़ी ही दूरी पर है।
3. पहाड़ का सीना चीर कर आगे बढ़ते झरने से प्रेरणा मिलती है कि मानव को आगे ही बढ़ते रहना चाहिए। विचलित नहीं होना चाहिए।
4. जब पथिक को प्यास लगती है, तब उसे अपनी मंजिल अधिक दूर दिखाई देती है।
5. कविता में कवि ने राही को आगे बढ़ते रहने का संदेश दिया है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)   4. (क)
2. (ग)   5. (ग)
3. (ख)

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. कवि जीवनरूपी पथिक को आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।
2. मानव के भीतर अपार शक्ति और संभावनाएँ छिपी हुई हैं।
3. जीवन-पथ की कठिनाइयाँ मनुष्य के दृढ़ संकल्प से आसान हो जाती हैं।

- **सोच-समझकर**

1. यह कविता हमें अधिक अच्छी लगी। इस कविता में कवि ने आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया है।
2. कविता के माध्यम से कवि ने मानव के दृढ़ संकल्प को ही उसकी शक्ति बताया है जिससे सभी कठिनाई आसान दिखाई देने लगती हैं।
3. 'चल रे मुसाफिर'

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पत्थरों, प्रबल   4. पैर, प्यास
2. निर्झर, पहाड़ों   5. प्यासा, विस्तृततर
3. मानव, छल

- **सही-मिलान**

(क)	(ख)
प्राण	तड़पते
थके	बटोही
भारी	छल
सोती	संसृति
प्यास	प्रबल

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. खराब मौसम, सड़क की खराब स्थिति या ऊब महसूस करना जैसे कई कारक यात्रा को लंबा महसूस करा सकते हैं– (1) भौतिक कारक, (2) मानसिक कारक, (3) भावनात्मक कारक, (4) तैयारी का अभाव।
2. आत्म-संदेह, बाहरी आलोचना या अप्रत्याशित समस्याओं जैसी चुनौतियाँ किसी लक्ष्य की प्राप्ति के दौरान मानसिक उथल-पुथल पैदा कर सकती हैं।

   आंतरिक बाधाएँ, बाहरी बाधाएँ, अनिश्चितता, **ध्यान भटकाने वाली चीजें–** आधुनिक जीवन ध्यान भटकाने वाली चीजों से भरा हुआ है जो प्राथमिक उद्देश्य से ध्यान हटा सकती है, जिससे आंतरिक संघर्ष उत्पन्न हो सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) बटोही   (घ) पथिक
   (ख) मंजिल   (ङ) निर्झर
   (ग) पहाड़   (च) मानव
2. दो-दो पर्यायवाची शब्द
   (क) रास्ता, मार्ग
   (ख) पर्वत, जंगम

(ग) मनुष्य, नर

(घ) पथिक, बटोही

3. **शब्दों में विशेषण**

(क) थका बटोही (ग) शीतल निर्झर

(ख) सोती संस्तृति (घ) प्रबल प्यास

4. (क) सबल

(ख) अधिक-सा/ज्यादा-सा

(ग) समीप

(घ) शान्ति

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

6. सुभागी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** विधवा, उजड्ड, गृहस्थी, बहादुर, जलसा, इकट्ठा, तारीफ, चारपाई, जरूरत, भाग्यशाली।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. सुभागी दो भाई-बहन थे।
2. बड़ी ही चतुर होने के कारण तुलसी महतो अपनी बेटी सुभागी को बहुत प्यार करते थे।
3. गाँव वालों को तुलसी महतो ने पंचायत कराने के लिए इकट्ठा किया।
4. तुलसी के मरने के पन्द्रहवे दिन के बाद सुभागी की माँ मर गई।
5. सजन सिंह ने सुभागी के सामने अपनी बहू बनाने का प्रस्ताव रखा।

- **लिखित**

1. तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई। रामू के जन्म पर उन्होंने रुपये कर्ज लेकर जलसा किया था और सुभागी पैदा हुई, तो घर पर रुपये होते हुए एक कौड़ी तक खर्च न की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न आज कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय। जो हमारी सब प्रकार सहायता करती है।
2. सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी ही समझा है, कि जब तक जिऊँगा, ऐसा ही समझता रहूँगा। तुम निश्चिंत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।
3. सुभागी की माँ ने अंतिम समय में सुभागी को आशीर्वाद दिया, "तुम्हारे जैसी बेटी पाकर मैं तर गई। मेरा क्रिया-कर्म तुम्हीं करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।"
4. जिस दिन सुभागी ने आखिरी किस्त चुकाई, उस दिन उसकी खुशी का ठिकाना न था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो चुका था।
5. "दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।" मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ कहेंगे, मेरे भले के लिए ही कहेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 4. (ख)

2. (ग) 5. (ग)

3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. "अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो" क्योंकि यदि हमारी संतान सद्बुद्धि की होगी तो हमारा जीवन सार्थक बन जाएगा।
2. दादा इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी। सुभागी ने इसलिए कहा कि मैं आपकी छत्रछाया पाकर धन्य हो जाऊँगी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

सुभागी ने कहा, "दादा अभी थकी नहीं हूँ। मुझे भी बहुत कार्य करना है। क्या आपने

पूरा हिसाब लगा लिया? कुल इस कार्यक्रम में कितना रुपया खर्च हुआ?

जिसे हम रत्न या घर का 'चिराग' समझते हैं, वह पुत्र कितना कठोर है, तथा जिसे हम अपनी किस्मत का दंड कहते हैं, वह मंगलकारी निकलती है।

सुभागी की माँ ने कहा, "तुम्हारी जैसी बेटी पाकर मैं धन्य हो गई हूँ। मेरा क्रिया-कर्म या दाह संस्कार तुम्हारे ही हाथों से होना चाहिए।"

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पंद्रहवें 2. तीन 3. विधवा
4. मेरा 5. भाग्यशाली

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

क्रम संयोजन

1. (7), 2. (5), 3. (6), 4. (3), 5. (2), 6. (4), 7. (1)

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि तुलसी सुभागी का पुन: विवाह कर देते तो माता-पिता का जीवन 'नरक' बन जाता, वह चैन की साँस भी नहीं ले पाते।
2. यदि रामू के दबाव में आकर उसके माता-पिता सुभागी को घर से अलग कर देते तो उसके माता-पिता जीते-जी मर जाते और रामू उन्हें खाना भी न देता।
3. सुभागी ने पिता के मृत्युभोज में पूरे गाँव को भोजन कराया। हमारे विचार में 13 ब्राह्मण या कन्या को भोजन कराना ही उचित है, लेकिन इस प्रकार मृत्युभोज में अधिक खर्चा करना फिजूल ही है।

- **भाषा आधारित**

1. **मुहावरों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग**

(क) तन-मन-धन लगाना

वाक्य प्रयोग–सुभागी ने अपने पिता की जी-जान लगाकर सेवा की।

(ख) त्याग करना

वाक्य प्रयोग– भगत सिंह ने देशसेवा में अपना शरीर न्योछावर कर दिया।

(ग) आश्चर्यचकित होना

वाक्य प्रयोग– राधा ने जब अपनी बहन का वैभव देखा, तो उसने दाँतों तले उँगली दबा ली।

(घ) पीछे पड़कर रह जाना

वाक्य प्रयोग– एक गरीब को मैंने सहायता क्या दी? वह तो मेरे गले का हार बनकर रह गयी।

2. (क) नेत्र (ख) वृद्धावस्था
(ग) मुख (घ) पैर

3. (क) दिन-प्रतिदिन तेजी से
(ख) धीरे-धीरे
(ग) बहुत (घ) जोर से

4. सजन–"तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं बेटी! तुम साक्षात भगवती का अवतार हो।"

सुभागी– "मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए करेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?

सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा, "बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?"

क्रियाकलाप-आधारित

1-4. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

5. **1. द्रोपदी मुर्मू**– वह एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। आप भारत की 15वीं और वर्तमान राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत हैं। वह इस पद को सँभालने वाली पहली आदिवासी महिला और दूसरी महिला हैं। राष्ट्रपति बनने से पहले झारखंड के नौवें राज्यपाल का पद सँभाला।

2. बछेन्द्री पाल– यह एक भारतीय पर्वतारोही हैं। 1984 में माउंट एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला थीं। 2019 में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया।

3. सावित्री बाई फूले– यह एक मराठी महिला हैं। इन्होंने महिलाओं और दलितों के लिए 18 से अधिक स्कूल खोले तथा विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया।

4. सुनीता विलियम्स– यह एक अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री और नौ सेना अधिकारी हैं। इनका जन्म ओहियो में हुआ था। इनके पिता भारतीय मूल के हैं। वह अमेरिकी नौसेना की सेवानिवृत्त कैप्टन और नासा की पूर्व अंतरिक्ष यात्री हैं। इन्होंने 27 साल तक कार्यरत रहने के बाद रिटायरमेंट लिया है।

7. गौरा

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** निर्मम, गोवत्साओं, कर्मनिष्ठा, पंखुड़ियों, नामकरण, सौंदर्य, विशालता, कृतज्ञता।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. गाय का महादेवी के घर आरती उतारकर स्वागत हुआ।
2. गौरा गाय के पेट में सुई चले जाने के बाद बीमार रहने लगी थी।
3. गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए लेखिका ने पशु-चिकित्सक से इलाज कराया। वे मोटे इंजेक्शन भी शल्य-क्रिया के समान दुखदायी होते।
4. निर्दोष गाय को किसी के द्वारा सुई खिलाए जाने से व्यथित लेखिका ने ऐसा कहा।
5. वह निर्मम सत्य था कि गौरा मृत्यु को प्राप्त हो गई।

- **लिखित**

1. पाठ के अनुसार गौरा के पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लंबी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो पंखुड़ियों जैसे कान, लंबी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ, सब कुछ साँचे में ढला हुआ सा था।
2. लेखिका गाय पालने के संबंधा में पहले दुविधाा में थी, लेकिन गौरा को देखते ही उनकी गाय पालने के संबंध में दुविधा निश्चय में बदल गई।
3. गोवत्स लालमणि अपने लाल रंग के कारण गेरू के पुतले जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे, मानो गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो।
4. जब गौरा की सुन्दर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चलीं और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा तब लेखिका ने उसके अंत का अनुमान लगा लिया। अब लेखिका एक ही इच्छा थी कि उसके अन्त समय में वह उसके पास उपस्थित रह सके। अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे जब लेखिका गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान लेखिका के कन्धे पर रखा वैसे ही वह एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और लेखिका की बाँहों से सरक कर धरती पर आ गया। कदाचित सुई ने हृदय को बेधकर बंद कर दिया। वास्तव में गौरा का अंत बहुत ही करूणापूर्ण था।
5. 'गौरा' पाठ का मुख्य संदेश है कि हमारा देश गोपालक है और हमेशा रहेगा। हमें अपने धार्मिक गोवंश की रक्षा करनी चाहिए, तथा यह संदेश देना भी है कि हमें पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील और दयालु होना चाहिए।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)

- **सोच-समझकर**

1. लेखिका ने यह पंक्ति अपने देश के गोपालकों की स्थिति देखकर दुखी होकर कही थी। महादेवी वर्मा ने उन लोगों के प्रति अपनी वेदना व्यक्त की है जो गाय पालते तो हैं पर उनका सही तरीके से ख्याल नहीं रखते। वह चाहती थीं कि देश के सभी गोपालक अपने पशुओं के प्रति संवेदनशील बनें और उनकी उचित देखभाल करें, क्योंकि गाय को करुणा की मूर्ति माना जाता है।
2. 'गौरा' पाठ की मूल संवेदना गाय के प्रति मानवीय करुणा और प्रेम को उजागर करना है। यह पाठ बताता है कि गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि करुणा और वात्सल्य की सजीव मूर्ति है। पाठ का मुख्य उद्देश्य यह संदेश देना है कि मनुष्यों को पशुओं के प्रति संवेदनशील और दयालु होना चाहिए, उन्हें केवल उपयोगिता के आधार पर नहीं आँकना चाहिए।
3. गौरा पाठ में गाय के बाहरी सौंदर्य के साथ-साथ मानवीय भावनाओं का गहरा चित्रण किया गया है। लेखिका ने गौरा के सुन्दर रंग-रूप का वर्णन किया है, लेकिन कहानी का मुख्य केंद्र गौरा की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुई मानवीय संवेदनाएँ हैं।

   गौरा की मृत्यु ने लेखिका और अन्य लोगों को गहरे तक प्रभावित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पशुओं के साथ भी भावनात्मक संबंध स्थापित हो सकते हैं।

   यह पाठ पशु-प्रेम और करुणा के मानवीय मूल्यों को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

पंक्तियों पर चर्चा–

1. इस पंक्ति का अर्थ है कि तेज रफतार या चंचलता में अपना एक अलग आकर्षण और सौंदर्य होता है, लेकिन जो ठहराव, शालीनता ओर गरिमा धीमी या मंथर गति (जैसे गौरा की चाल) में होती है, वह तेज गति में नहीं मिल सकती। गौरा की धीमी चाल में एक विशेष प्रकार का माधुर्य और शांति थी।
2. लेखिका के अनुसार, हिरन की आँखे हमेशा चौकन्नी और विस्मय (हैरानी) से भरी रहती हैं, जैसे वे किसी अनजाने डर में हों। इसके विपरीत, गौरा (गाय) की आँखों में कोई भय या अचंभा नहीं था। उसकी आँखों में अपनों के प्रति गहरा प्रेम, शांति और एक अटूट भरोसा (आत्मीय विश्वास) झलकता था।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

  1. प्रियदर्शन 2. गौरा 3. चमक
  4. लालमणि 5. गंगा

- **सही-गलत**

  1. (✓), 2. (✓), 3. (×), 4. (×), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. निरीह पशु-पक्षियों के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके प्रति दया, प्रेम और करुणा का भाव रखें।

   हमें उन्हें भोजन-पानी और सुरक्षित आश्रय प्रदान करना चाहिए। हमें उन्हें किसी भी प्रकार की पीड़ा या शोषण का शिकार नहीं बनाना चाहिए। उनकी प्रजातियों के संरक्षण और उनके प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा के लिए प्रयास करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सा सेवाओं का ध्यान रखना चाहिए।
2. यदि मुझे ग्वाला को दंड देने का अधिकार दिया जाता, तो मैं उसे पशुओं के प्रति क्रूरता के दुष्परिणामों के बारे में शिक्षित करता और उसे पशु-कल्याण केन्द्र में कुछ समय के लिए सेवा करने का दंड देता ताकि वह जिम्मेदारी और दया का महत्व समझ सके।
3. यदि मैं कोई पशु पालना चाहता तो मैं एक गाय पालता। मैं उसकी देखभाल करता, उसे नियमित रूप से पौष्टिक भोजन देता, समय पर पशु चिकित्सक के पास ले जाता और उसे पर्याप्त प्यार व समय देता।

- **भाषा आधारित**

1. (क) गो – गाय, पृथ्वी

   (ख) कंठ – स्वर, आवाज

   (ग) गुरु – दीर्घ, शिक्षक

(घ) घन – बादल लोहे का हथोड़ा

2. निम्न के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द

(क) धेनु, गौ, गैया

(ख) पुत्र, बेटा, सुत

(ग) मरण, मौत, देहांत

(घ) दुग्ध, पय, अमृत

3. वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटिए–

	उद्देश्य	विधेय
(क)	गौरा	प्रतिदिन बारह सेर दूधा देती थी।
(ख)	ग्वाला ने	गौरा को गुड़ में सुई खिला दी।
(ग)	मेरी छोटी बहिन ने	मुझे एक गाय दी।
(घ)	गौरा ने	एक सुंदर बछड़े को जन्म दिया।

4. शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए–

(क) दूध देने वाली

वाक्य प्रयोग– कामधेनु गाय पयस्विनी होती है।

(ख) दिखने में प्रिय

वाक्य प्रयोग– गौरा वास्तव में ही बहुत प्रियदर्शिनी थी।

(ग) बिना आभा (चमक)

वाक्य प्रयोग– गौरा की सुंदर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चलीं।

(घ) निर्मोही (दुखभरा)

वाक्य प्रयोग– अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ।

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

8. कुसंग का ज्वर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** पर्वत, सम्मान, कटुभाषी, कुसंगति, भाग्यशाली, मंथरा, तुलसीदास, शाखाएँ, धर्मात्मा।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. कुसंग का ज्वर भयानक होता है।
2. हंस ने कौए का साथ लिया।
3. कौए की संगति का हंस को परिणाम मिला, कि हंस पकड़ा गया।
4. समुद्र पर पुल रावण की संगति के कारण बाँधा गया।
5. बेर और केले का पेड़ साथ रहने पर केले के पत्ते तार-तार हो जाते हैं।

- **लिखित**

1. कौआ दुष्ट था। उसने हंस से कहा, "हंसराज भाई, आप तो स्वभाव के महात्मा है, आपके मन में मृदु और कटुभावी का भेद कैसा? मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ। इससे तो आपका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। हो सकता है आपके साथ रहकर मेरा उद्धार हो जाए।" हंस भोला-भाला था।
2. महाराज राम का राज्याभिषेक करने की तैयारी कर रहे थे। सहसा वज्रपात हो गया। राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ। सीता और लक्ष्मण भी वन को चले गये। राजा दशरथ की अचानक मृत्यु हुई, भरत ने भी अयोध्या का राजा बनना स्वीकार नहीं किया।
3. लंका में रावण जैसे राक्षसों का निवास था। राक्षसों की कुसंगति समुद्र की महिमा को ले बैठी। भारत के रामेश्वरम् से लेकर लंका के उत्तरी तट पर सौ योजन चौड़े सागर को सेतु द्वारा बाँध दिया गया। सागर की सारी महिमा मिट्टी में मिल गई।
4. केले के पास बेर का एक छोटा-सा पेड़ उग आया। केले ने सोचा, "चलो इससे

हानि भी क्या है? अपने हिस्से की हवा पानी लेगा, मेरा क्या बिगड़ेगा? मेरा इससे न कुछ हिस्सा-बाँट है, न कुछ लेना-देना है।" उसे क्या पता था कि दुष्टों के पड़ोस में बसने से जीवन यंत्रणापूर्ण बन जाता है।

5. रहीमदास जी ने अपने दोहे में सीख देते हुए कहा है कि जो उत्तम प्रकृति के लोग होते हैं, उनका बुरी संगति कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, जैसे– चन्दन के पेड़ पर कितने ही सर्प लटके तथा चिपके रहते हैं किन्तु चंदन पर उसके विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 4. (ख)
2. (ग) 5. (ग)
3. (क)

- **सोच-समझकर**

1. हंस को कौए की बात नहीं माननी चाहिए थी।
2. राजा दशरथ को भाग्यशाली इसलिए कहा गया है कि उनके घर में भगवान स्वयं शरीर धारण करके अवतरित हुए थे।
3. कैकेयी को देवी समान माना गया, लेकिन दासी मंथरा की संगति के कारण उत्पात मचाया।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. यह बिल्कुल सत्य है, कि कुसंग एक भयानक ज्वर है, जो शरीर ही नहीं, मन और बुद्धि को भी कुंठित कर देता है। बड़े-बड़े वीर और धर्मात्मा भी कुसंगति में फँसकर दु:ख भोगते हैं। अत: हमें अच्छे लोगों के साथ संगति करनी चाहिए।
2. समुद्र के पड़ोस में लंका थी। लंका में रावण जैसे राक्षसों का निवास था। इसी कारण सागर पर कुसंगति का प्रभाव पड़ा और उसकी महिमा भी समाप्त हुई।
3. केले को कुसंगति के इस भयंकर ज्वर की पीड़ा भोगना अनिवार्य था, क्योंकि उसने अपने पड़ोस में बेर जैसे दुष्ट के बसाने से जीवन कष्टमय बना लिया ।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. उद्धार 2. मंथरा 3. राक्षसों
4. यंत्रणापूर्ण 5. कुसंगति

- **किसने, किससे कहा?**

किसने कहा?	**किससे कहा?**
कौए ने	हंस से
हंस ने	कौए से
कौए ने	हंस से
हंस ने	कौए से

- **सही मिलान कीजिए**

हंस – कौआ, दधिपात्र – ग्वाला, कैकेयी – मंथरा, बेर – केला, रावण – समुद्र।

- **सही-गलत**

1. (×), 2. (×), 3. (✓), 4. (✓), 5. (×)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि हंस कौए की बात नहीं मानता तो कहानी का अन्त होता कि कौए का साहस नहीं बढ़ता और पकड़ा जाता।
2. यदि हम छुपकर किसी कार्य को करेंगे, तो वह हमारी संगति गलत होगी। अगर हम किसी भी कार्य को सभी के सहयोग व सोच-विचार कर करेंगे तथा सज्जनों की संगति ही अच्छी होती है।
3. यदि हम किसी को मित्र बनाना चाहेंगे तो हमारा मित्र विश्वासपात्र तथा हमें गलत कार्यो के बारे में समझायेगा और उस गलत कार्य को कभी भी नहीं करने देगा। हमारा सच्चा मित्र हमारी विपत्ति में साथ नहीं छोड़ेगा।

- **भाषा आधारित**

1. **समानार्थक शब्द लिखिए–**

(क) कागभुसुंड
(ख) मराल, नीर-क्षीर विवेकी, श्वेतपाद
(ग) सागर
(घ) नृप

(ङ) कदली
(च) दोस्त (सखा)

2. शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) दुर्बुद्धि (ख) हंस
(ग) धर्माचार्य (घ) अथाह

3. प्रयुक्त प्रत्यय और मूल शब्द अलग कीजिए–

	प्रत्यय		मूल शब्द
(क)	कु	+	संग
(ख)	अ	+	भाव
(ग)	सम	+	मान
(घ)	अप	+	मान

4. वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) कौए और हंस द्वारा ग्वाले का दही खाया जाता है।

(ख) कैकेयी द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाता है।

(ग) बेर अपनी मस्ती में झूमता रहा है।

(घ) भरत द्वारा राज्याभिषेक कराया जाता है।

(ङ) राम द्वारा समुद्र पर पुल बाँध दिया जाता है।

1. क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

9. जो बीत गई सो बात गई

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** प्याला, मृदु, मधु, सितारा, अंबर, मधुबन, वल्लरियाँ, निछावर।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. जीवन में बेहद प्यारा एक सितारे को बताया गया है।
2. अंबर टूटे हुए तारे के लिए शोक नहीं मनाता है।
3. मधुबन में जो बेलें (लता) तथा फूल हैं। वे सब मुरझा गई हैं।
4. मदिरालय प्याले के टूटने पर शोक नहीं मनाता है।
5. वक्ता भविष्य पर नित्य निछावर होने की बात करता है।

- **लिखित**

1. कवि ने अंबर के आनन को देखने के लिए कहा है कि अंबर के सारे तारे टूट-कर समाप्त हो चुके हैं।
2. प्यालों के टूटने पर मदिरालय शोक नहीं मनाता, उन्हें तो एक दिन समाप्त होना ही है।
3. कवि इस पंक्ति द्वारा संदेश देना चाहता है। इस संसार में जो समय बीत गया वह वापस नहीं आयेगा। अत: मानव को शोक नहीं करना चाहिए।
4. अंबर, मधुबन और मदिरालय ये सभी मनुष्य को संदेश देते है, कि यह संसार जीवन-मरण का एक चक्रव्यूह है। जो यहाँ आता है, उसे जाना पड़ता है।
5. इस संसार में मनुष्य को अपने प्रियजन के बिछोह का शोक नहीं करना चाहिए। भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 4. (ग)
2. (ग) 5. (ग)
3. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. कवि ने आकाश के टूटते सितारों द्वारा समझाने का यह प्रयास किया है कि आकाश उन तारों के टूटने पर शोक नहीं करता है।
2. रात-दिन, सुख-दुख की तरह ही जीवन और मृत्यु एक-दूसरे के पूरक हैं। यह प्रकृति का नियम है कि आत्मा कभी मरती नहीं है। जिसने जन्म लिया है, उसे एक दिन

अवश्य ही यह संसार त्यागना पड़ेगा।

3. सकारात्मक रुचि बनाए रखने के लिए कविता पूर्ण रूप से उपयोगी है। यहाँ प्रकृति द्वारा सब कुछ नष्ट होता है, किन्तु अपने जीवन में उसे भुला देना ही सार्थक है, क्योंकि एक फूल मुरझा जाता है तो दूसरे दिन अनेक फूल खिल जाते हैं।
4. 'जो बीत गई सो बात गई' बीते हुए समय की परवाह नहीं करनी चाहिए। बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। समय अमूल्य है, अत: हमें भविष्य में आने वाले समय का सदुपयोग करना चाहिए।

2. मानव के छोटे से जीवन में दुख और सुख आते-जाते ही रहते हैं।

3. जो सच्चे महापुरुष हैं, वे अपने जीवन को ईश्वर का चिन्तन करके ही अपना अमूल्य समय का लाभ उठाते हैं। दु:ख नहीं मनाते।

4. मधुबन में फूलों के सूख जाने से मधुवन चिंतित नहीं होता क्योंकि पुराने फूल नष्ट होते हैं, तो नये फूल मधुबन की शोभा बढ़ाते हैं।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. सितारा, प्यारा 2. अंबर
3. कुसुम 4. मदिरालय, प्याले
5. मधु, मादकता

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **सुमेलन**

(क)		(ख)
तारा	–	अंबर
मुरझाई	–	वल्लरियाँ
सूखी	–	कलियाँ
नित्य	–	निछावर
मदिरालय	–	आँगन

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. यदि हमारा कोई नुकसान होता है, तो अपने को समझाना पड़ता है, कि जो नुकसान हुआ है, वह कलह या दुख मनाने से आने वाला नहीं, इसलिए अपने भविष्य को सुधारने का प्रयास करते हैं।
2. गलती हो जाने पर हमें यह सीख मिलती है कि आगे हमसे गलती न हो, उसे सुधारने का प्रयास करते हैं। हमें अपने जीवन में नया कुछ सीखने को मिलता है।
3. हमारी प्रिय वस्तु यदि छिन जाती है, तो हमें दु:ख की प्राप्ति होती है। हम बार-बार उस प्रिय वस्तु का अनुभव करते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **विपरीतार्थक शब्द लिखिए–**

(क) दु:ख (ख) रात
(ग) मरण (घ) हर्ष
(ङ) कटु (च) गीली

2. **वर्ण-विच्छेद कीजिए–**

(क) म्+अ+द्+इ+र्+आ+ल्+अ+य्+अ
(ख) न्+इ+छ्+आ+व्+अ+र्+अ
(ग) ज्+ई+व्+अ+न्+अ
(घ) म्+अ+ध्+उ+ज्+अ+न्+अ

3. **प्रश्नवाचक** = मदिरालय में क्या मधु घट रखे हैं?

नकारात्मक = अंबर तारा टूटने का शोक नहीं मनाता है।

विस्मयादिबोधक = अरे! मधुबन की बेल और कलियाँ सूख गईं।

आज्ञार्थक = मधुबन शोक नहीं मनाना।

4. **सन्धि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए–**

(क) मदिरा + आलय = दीर्घ संधि
(ख) सद् + एव = वृद्धि संधि
(ग) महा + उत्सव = गुण संधि
(घ) मन: + योग = विसर्ग संधि

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

10. अमर शहीद : आजाद

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** परतंत्रता, बुद्धिमान, क्रांतिकारी, अग्रगण्य, चन्द्रशेखर, निशानेबाज, बहिष्कार, स्वाधीनता

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. चंद्रशेखर आजाद ने धनुष-बाण चलाना भीलों से सीखा था।
2. संगठन के लिए धन कहाँ से मिले, इसलिए क्रांतिकारियों ने सरकारी खजाना लूटा था।
3. जलियाँवाला बाग के भयंकर हत्याकांड को सुनकर, यद्यपि चंद्रशेखर की अवस्था छोटी ही थी, तो भी भारतीय राजनीति में उनकी रुचि जग गई।
4. काकोरी षड्यंत्र के मुकदमे में रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला और राजेन्द्र लाहिडी को फाँसी हो गई।
5. नेहरू चंद्रशेखर प्रत्येक बेंत पड़ने के साथ चिल्लाता, 'महात्मा गांधी की जय।' वह बालक तब तक नारा लगाता रहा, जब तक वह बेहोश न हो गया। इस घटना से पं. जवाहरलाल प्रभावित हुए।

- **लिखित**

1. पकड़े गये क्रांतिकारियों को अंग्रेजी सरकार उन्हें फाँसी या कालेपानी की सजा देती।
2. चंद्रशेखर संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजे गए।
3. बालक चंद्रशेखर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनसे कचहरी में मजिस्ट्रेट ने पूछा– "तुम्हारा नाम क्या है?" उन्होंने अकड़ कर बताया, "आजाद"।

   "तुम्हारे बाप का नाम क्या है?" "स्वाधीनता"। "तुम्हारा घर कहाँ है?" "जेलखाना।"
4. एक बार वे लाल रोशनी देने वाली दियासलाई से खेल रहे थे। उन्होंने साथियों से कहा कि एक सलाई से जब इतनी रोशनी होती है तो सब सलाइयों को एक साथ जलाए जाने पर न जाने कितनी रोशनी होगी। चंद्रशेखर सामने आये और उन्होंने कहा कि मैं एक साथ सलाइयों को जलाऊँगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तमाशा तो खूब हुआ। उनका हाथ भी जल गया, पर उन्होंने उफ् तक नहीं की। जब लड़कों ने उनके हाथ को देखा तो मालूम हुआ कि उनका हाथ बहुत जल गया है। सब लड़के उपचार के लिए दौड़ पड़े, पर चंद्रशेखर के चेहरे पर पीड़ा का कोई भाव न था और वे खड़े-खड़े मुस्कुरा रहे थे।
5. पूरे एक घंटे तक दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। कहते हैं, जब आजाद के पास गोलियाँ खत्म होने लगीं, तो अंतिम गोली उन्होंने स्वयं को मार ली। इस प्रकार वह महान योद्धा मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा के लिए सो गया। अपनी यह प्रतिज्ञा उन्होंने अंत तक निभाई कि वे कभी जिंदा नहीं पकड़े जाएँगे।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ग)
4. (क) 5. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. भारत के क्रान्तिकारी अपना संगठन बना रहे थे। चंद्रशेखर आजाद उनसे अधिक प्रभावित हुए और दल में शामिल हो गए। क्रांतिकारियों का कहना था कि अंग्रेज अहिंसात्मक रीति से नहीं मानेंगे। उन्हें भय दिखाकर भारत छोड़ने के लिए मजबूर करना होगा। बालक चंद्रशेखर अंग्रेजों के बेंत खाते-खाते बेहोश हो गये थे और उनके शरीर की चमड़ी उधेड़ डाली थी।
2. अंग्रेज सिपाही ने जब आजाद का शरीर बड़ी देर तक निस्पंद पड़ा देखा तब वह आगे उनकी ओर बढ़ा। आजाद का आतंक इतना था कि उन्होंने पहले एक गोली मृत शरीर पर मारकर निश्चय कर लिया कि वे सचमुच मर गए हैं।

3. अल्फ्रेड पार्क में आजाद जिस स्थान पर शहीद हुए, वहाँ उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। वहाँ जाने वाला हर व्यक्ति उस वीरात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जिसने अपनी जन्मभूमि को पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए अपना जीवन सहर्ष बलिदान कर दिया।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

समूह में चर्चा का आशय 1. चाहे पिंजरे में बंद पक्षी हो, चाहे रस्सी से बँधा हुआ पक्षी हो। सभी परतंत्रता के बंधनों से मुक्त होना चाहते हैं। फिर मनुष्य तो पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और संवेदनशील होते हैं। उसे गुलामी की जंजीर हमेशा खटकती है और वह अपना जीवन स्वतंत्र तथा आजादी के साथ जीना चाहता है।

आशय 2. जनता में आजादी की चिंगारी सुलगाने का काम प्राय: क्रांतिकारी ही करते थे। वे सभा सोसाइटी आदि में भाषण द्वारा जनता को अपने साथ मिलाकर मजबूत संगठन तैयार करते थे।

आशय 3. बालक चन्द्रशेखर के साथ जब अंग्रेजों ने उस पर जुल्म ढाए, तब वह बालक 'आजाद' नाम से विख्यात हो गया। उस समय क्रांतिकारी संगठन बना रहे थे। चंद्रशेखर आजाद उनसे अधिक प्रभावित हुए और वे भी दल में शामिल हो गये। उस समय प्रत्येक लेखक तथा कवि भी असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मजिस्ट्रेट   2. 1928
3. काकोरी षड्यंत्र   4. लाला लाजपत राय
5. अंतिम गोली।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (×), 3. (×), 4. (×), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. सभी जीवों को अपने प्राण सबसे प्रिय होते है, फिर भी हमारे देश के महान वीर सपूतों ने अपने देश तथा राष्ट्रहित के लिये अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।
2. चंद्रशेखर आजाद वीर व साहसी बचपन से ही थे। जिस काम को करना चाहते उसे करके ही दम लेते थे। उन्होंने अपने देश तथा भारत माँ को आजाद कराने की प्रतिज्ञा स्वीकार की, कि हम अपनी भारत माँ की परतंत्रता को समाप्त करके ही दम लेंगे।
3. चंद्रशेखर संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजे गए, पर उनका मन वहाँ नहीं लगा और वे भागकर अपने बाबा के घर अलीपुर स्टेट पहुँच गये। यहाँ पर उन्हें भीलों से मित्रता हुई और एक अच्छे निशानेबाज हो गए। चंद्रशेखर को फिर काशी भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने संस्कृत व्याकरण का अभ्यास किया और रामायण, महाभारत और भागवत की कथा सुनते थे। वीरों की गाथाएँ उन्हें बहुत पसन्द थीं। अगर संस्कृत सीखकर पौरोहित्य कार्य करने लगते तो उनकी वीरता और साहस के बिना भारत माँ परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी रहती।

- **भाषा आधारित**

1. **समस्त पदों का विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए—**

समस्त पद	**विग्रह**	**समास का नाम**
आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययीभाव समास
वर्षपर्यन्त	वर्ष भर तक	तत्पुरुष समास
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
सुख-सुविधा	सुख और सुविधा	द्वन्द्व समास

2. **उचित विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—**

(क) छोटी (ख) वीर
(ग) आततायी (घ) वयोवृद्ध

3. सर्वनाम शब्दों के बहुवचन रूप—

(क) हमको (ख) हमने
(ग) हमरा (घ) तुमको/तुम्हें

4. **गद्यांश में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग–** आज़ाद जिस स्थान पर शहीद हुए, वहाँ उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। वहाँ जाने वाला हर व्यक्ति उस वीरात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जिसने अपनी जन्मभूमि की पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए अपना जीवन सहर्ष बलिदान कर दिया।

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

11. ठेले पर हिमालय

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** हिमालय, कौसानी, नैनीताल, आभास, निर्जन, हर्षातिरेक, आत्मलीन, सौंदर्य।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखक बर्फ देखने कौसानी गए थे।
2. अपार सौंदर्य बिखरा था, सामने की घाटी में।
3. डाकबँगले के खानसामे ने हमें बताया कि आप लोग खुशकिस्मत हैं साहब।
4. लेखक ने ठेले पर लदी सिलों में हिमालय की छाया देखी।
5. जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो यह बस उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है।

- **लिखित**

1. लेखक नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से महाकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी पहुँचे। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नामों-निशान तक नहीं था। ढालों को काटकर बनाए हुए टेड़े-मेढ़े रास्ते। कोसी पहुँचते-पहुँचते सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।
2. कौसानी के अड्डे पर बस जाकर रुकी। छोटा-सा बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव जहाँ बरफ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। ऐसा लगा मानो लेखक ठगे गए।
3. बस से उतरा और जहाँ का तहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। वहाँ पर अपार सौंदर्य बिखरा पड़ा था, सामने की घाटी में। पर्वतमाला ने अपने आँचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी बहती हुई नदियाँ।
4. बिजली-सा विचार लेखक के मन में कौंधा कि इसी घाटी के पास वह नगाधिराज पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढक रखा है, और जो सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर है जो बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, "बरफ! वह देखो।"
5. लेखक एक पान की दुकान पर अपने अल्मोड़ा वासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी ठेले पर बरफ की सिलें लादे हुए एक बरफवाला आया। ठंडी, चिकनी चमकती बरफ से भाप उड़ रही थी। हम क्षणभर उस बरफ को अपलक देखते रहे, उससे उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, "यही बरफ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल ही यह शीर्षक मेरे मन में कौंध गया– ठेले पर हिमालय।

- **प्रत्यास्मरण**

1. पर्वतमाला ने अपने अंचल में कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है।
2. लेखक के अनुसार इस घाटी में किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे।

3. रास्ते सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल हैं।
4. 'पर्वतमाला' का समास विग्रह होगा। (पर्वतों की माला)

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (क) 2. (ख) 3. (घ)
4. (ख) 5. (ग)

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. हिमालय की शोभा
2. ढालों को काटकर
3. किन्नर, यक्ष
4. हर्षातिरेक, "बरफ! यह देखो।"
5. जलराशि, हिमालय की

- **सोच-समझकर**

1. घाटी का अपार सौन्दर्य बिखरा था। पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी थी। कौसानी के उस दृश्य को देखकर वह मूर्ति के समान खड़ा रह गया।
2. बरफ की हल्की-सी झलक दिखाई देने पर लेखक ने सोचा– इन बादलों में यह क्या चीज है, जो अटल है। यह छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा और कैसा अजब रंग है इसका। न सफेद, न रूपहला, न हल्का नीला लेकिन इन तीनों का आभास देता हुआ। क्या है यह? बरफ तो नहीं है और बिजली-सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढक रखा है और जो सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर है जो बादलों की खिड़की से झाँक रहा है।
3. सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बरफ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी और घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा गहराने पर हम उठे। मुँह-हाथ धोए और चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, जिसे अन्दर-ही-अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।
4. लेखक नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से महाकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए पहुँचे। कोसी से एक सड़क अल्मोडा जाती है और दूसरी कौसानी कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नामोनिशान नहीं, सूखे-भूरे पहाड़, हरियाली का नामोनिशान तक नहीं था। ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े-मेढ़े रास्ते। कोसी तक पहुँचते-पहुँचते सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. पर्वतीय क्षेत्रों का प्राकृतिक सौंदर्य अद्वितीय होता है। पर्वतीय स्थल अपने प्राकृतिक, शांत वातावरण और अनूठी जीवन शैली के लिए जाने जाते हैं। यहाँ के ऊँचे पर्वत शिखर, बहती नदियाँ और घने जंगल मन को शांति प्रदान करते हैं। सुबह के समय सूर्य की किरणें जब चोटियों पर पड़ती हैं, तो पूरा परिदृश्य सुनहरा हो जाता है। यहाँ की ठंडी और ताजी हवा शहरी जीवन की थकान को दूर कर देती है। पर्वतीय क्षेत्रों में ट्रेकिंग, कैंपिंग और विभिन्न प्रकार के साहसिक खेल यात्रियों को एक अद्भुत अनुभव प्रदान करते हैं।
2. **हिमालय के महत्व पर दो मित्रों के मध्य संवाद–**

राहुल – नमस्ते अमित! तुम जानते हो हमारे जीवन में हिमालय का क्या महत्व है।

अमित – हाँ राहुल, हिमालय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे 'पर्वतराज' भी कहा जाता है।

राहुल – यह भारत की जलवायु को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, है ना?

अमित – बिल्कुल यह जाड़ों में आने वाली ठंडी ध्रुवीय हवाओं को भारतीय भू-भाग पर आने से रोकता है, जिससे भारत इन हवाओं के प्रकोप से बच जाता है।

राहुल – इसके अलावा, हिमालय कई नदियों का उद्गम स्थल है, और यहाँ महत्वपूर्ण औषधियाँ भी पाई जाती हैं।

अमित – सही कहा, यह भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राकृतिक और राजनीतिक सीमा भी बनाता है।

राहुल – तो, हिमालय सिर्फ एक पर्वत शृंखला नहीं, बल्कि हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है।

अमित – हाँ, यह हमारे पर्यावरण और संस्कृति दोनों के लिए अमूल्य है।

- **भाषा आधारित**

1. **समास-विग्रह** — **समास का नाम**
   - (क) हिम का आलय — तत्पुरुष समास
   - (ख) जल की राशि — संबंध तत्पुरुष
   - (ग) शीर्ष पर आसन — अधिकरण तत्पुरुष
   - (घ) पर्वत की माला — संबंध तत्पुरुष
   - (ङ) तन्द्रा का आलस — संबंध तत्पुरुष
   - (च) प्रसन्न से वदन (मुख) — कर्मधारय
2. **प्रत्यय** — **मूल शब्द**
   - (क) प्रद — कष्ट
   - (ख) ई — मखमल
   - (ग) पन — धुँधला
   - (घ) ता — खिन्न
   - (ङ) वट — थकान
3. **पद-परिचय–**
   - (क) हम – सर्वनाम
   - (ख) धीरे-धीरे – क्रिया विशेषण
   - (ग) मैं – सर्वनाम
   - (घ) हिमालय – संबंधबोधक
   - (ङ) ठंडी, चिकनी – नामधातु क्रिया
4. **शब्दों के सहित वाक्य प्रयोग–**
   - (क) **अर्थ –** डरावना
     वाक्य प्रयोग– कंचन का भयानक रूप देखकर मैं तो डर गई।
   - (ख) **अर्थ –** आश्चर्यचकित हो जाना
     वाक्य प्रयोग– लेखक जहाँ का तहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया।
   - (ग) **अर्थ –** अत्यधिक प्रसन्नता
     वाक्य प्रयोग – लेखक हर्षातिरेक से चीख उठा, "बरफ! वह देखो।"
   - **(घ) अर्थ –** शरीर के रोम खड़े हो जाना
     वाक्य प्रयोग– बायीं ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती हुई पर्वतराज के हिम-शिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला देखकर मैं खुश हो गया।
   - **(ङ) अर्थ –** साफ, पवित्र
     वाक्य प्रयोग– गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी।

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

12. दो कलाकार

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** इकलौती, गलतफहमी, खिचड़ी, पाठशाला, मूसलाधार, अखबार, शोहरत, प्रसिद्ध।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. अरुणा और चित्रा के मध्य मित्रता का संबंध था।
2. चित्रा हॉस्टल छोड़ने के बाद विदेश गई।
3. चित्रा विदेश चली जाएगी, तो मैं कैसे रहूँगी, इसी कारण अरुणा कई दिन तक उदास रहती है।
4. अरुणा जमादार भाइयों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ाती है।
5. अरुणा और चित्रा में यथार्थवादी अरुणा है, क्योंकि अरुणा ने ही उन बच्चों को गोद लिया और उन्हें माँ-बाप का प्यार दिया।

- **लिखित**

1. अरुणा को तीन-चार बच्चे पढ़ने के लिए बुलाने आए थे।
2. अरुणा देर रात हॉस्टल में बाढ़ पीड़ितों की सेवा करके लौटी थी। उसकी हालत काफी

खस्ता हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आई थी मानो छह महीने से बीमार हो।

3. बाढ़ पीड़ितों की सहायता में अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती।
4. मृत भिखारिन और उसके सूखे शरीर से चिपके हुए दो बच्चों वाली घटना महत्वपूर्ण है क्योंकि एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा– "बता दूँ?" और उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली– "ये ही वे दोनों बच्चे हैं।"

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 2. (ग) 3. (क)
4. (घ) 5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. चित्रा चित्रकला से जुड़ी है और अरुणा समाज सेवा से। इस दृष्टि से अरुणा को भी कलाकार माना जा सकता है। चित्रा केवल चित्रकला द्वारा अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करती है तथा धन कमाती है लेकिन अरुणा असहायों की सेवा निःस्वार्थ ही करती है।
2. 'दो कलाकार' कहानी का मूल उद्देश्य यह है कि चित्रा अपनी चित्रकला का प्रदर्शन करती है। अरुणा एक ऐसी कला. कार है, जो असहायों एवं निर्धन जनता की सेवा कर अपनी यथार्थवादी कला को महत्वपूर्ण बनाती है अर्थात् शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "अरे यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ड्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है? चित्रा ने अरुणा से कहा–"जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?" तेरी बेबकूफी का। आई है बड़ी प्रतीक वाली।" "अरे अरुणा, यह चित्र आज की दुनिया के कन्फ्यूजन का प्रतीक है, समझी।" बिना मतलब जिंदगी खराब कर रही है।

2. धनी पिता की इकलौती सन्तान ठहरी तेरी इच्छा कभी टाली नहीं जा सकती है। लेकिन सच यह है कि मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती।

3. जब चित्रा स्टेशन पर लड़कियों के साथ पहुँची तो वहाँ उसे सभी दिखाई दे रहा था। वह उस भिखारिन का चित्र भी लेकर गई, लेकिन उस मृत के दोनों बच्चों को सनाथ करने वाला कोई नहीं था। चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही हैं। मगर अरुणा तो केवल जीवित प्राणियों की सेवा में लगी थी। इस कारण अरुणा रेल स्टेशन पर दिखाई न पड़ी।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चित्रकार 2. पढ़ाती 3. विदेश
4. प्रदर्शनी 5. बच्चे

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **क्रम संयोजन**

1. (4), 2. (6), 3. (2), 4. (8), 5. (5), 6. (1), 7. (3), 8. (7)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. आज के मानव ने पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ की है इसी कारण प्रकृति प्रकोप बढ़ रहा है। मानव ने आज पेड़ों की कटाई की है जिस कारण बाढ़ आ रही है। प्रकृति में जो पर्वत है उनको काटा जा रहा है, जंगलों की जगह समतल भूमि बनाकर मकान बनाए जा रहे हैं, इन्हीं कारणों से बाढ़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है।
2. हमें एक रोता हुआ बालक मिलता है तब हम उस बच्चे के माता-पिता का पता लगायेंगे, बच्चे को चुप करायेंगे उस की देखभाल करेंगे, खाना-पीना, साफ-सफाई आदि का

ख्याल रखते हुए पास की पुलिस चौकी पर सूचना लिखाऐंगे तथा बच्चे को तब तक अपने पास रखेंगे, कि जब तक उसके माता-पिता का पता नहीं चल जाता है।

3. एक नागरिक के रूप में बाढ़-पीड़ितों के लिए चंदा करके धन की व्यवस्था कर, उनके खाने-पीने का सामान भिजवाने के लिए किसी नेता से मिलकर उनके पास भिजवाने का इन्तजाम करायेंगे तथा उनकी जितनी हम सहायता कर सकते हैं, करने का प्रयास करेंगे।
4. चित्र बनाने और समाजसेवा दोनों में समाज-सेवा श्रेष्ठ है। समाज-सेवा से हम अपने जीवन में पुण्य प्राप्त करते हैं किन्तु चित्रकारी में केवल प्रसिद्धि व धन की पूर्ति होती है परमात्मा प्रसन्न नहीं होता है।

- **भाषा आधारित**

1. **मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग–**

(क) अर्थ – प्रचार करना

वाक्य प्रयोग– अरुण अपनी कक्षा में प्रथम आया उसने तो पूरे मोहल्ले में ढिंढोरा पीट डाला।

(ख) अर्थ – आश्चर्य से देखते रह जाना, अपलक देखना

वाक्य प्रयोग – विस्मय से चित्रा की आँखें फैली रह गईं।

(ग) अर्थ – अधिक कमजोरी होना

वाक्य प्रयोग– पंद्रह दिन बाद अरुणा लौटी तो उसकी हालत खस्ता हो गई।

(घ) अर्थ – लज्जित होना

वाक्य प्रयोग– चित्रा अपने चित्र में बने बच्चों को अपने सामने देखकर कायल हो गई।

2. **वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण–**

(क) कल तो उसे नहीं देखा था। – निषेधार्थक

(ख) उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ कब होती थीं? – प्रश्नवाचक

(ग) जी हाँ! मैं अपने को रोक नहीं सकी। – विस्मयादिबोधक

(घ) ये सचमुच के बच्चे नहीं थे मौसी। – निषेधार्थक

(ङ) अरुणा सवेरे ही उसका सामान ठीक कर देना। – आज्ञार्थक

3. **वाक्यों में से निपात–**

(क) भी (ख) थोड़े ही

(ग) केवल (घ) लगभग

4. **गद्यांश में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग–**

चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया। "अरे! क्या है?" आँखें मलते हुए तनिक झुझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली– "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

13. भक्ति के पद

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** हिरणाकुष, शरीर, मैया, लकुटि, मस्जिद, तलाश, ज्ञानी, कृपानिधि

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. भगवान ने नरहरि (नृसिंह) का रूप धरकर हिरणाकुश को मारा।
2. द्रोपदी की लाज भगवान (श्रीकृष्ण) ने बचाई।
3. बालकृष्ण के अनुसार ग्वाल-बाल उससे बैर मानते हैं।
4. कबीर पलभर की तलाश में आत्मा और परमात्मा से मिलने की बात करते हैं।
5. रावण की भक्ति से प्रसन्न होकर 'शिवजी' ने संपत्ति प्रदान की।

- **लिखित**

1. जल से भगवान (श्रीकृष्ण) ने गजराज को बाहर निकाला था, क्योंकि गजराज ने भगवान को पुकारा था।
2. मीराबाई ने स्वयं को दासी तथा कृष्ण को गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला बताते हुए, अपने आराध्य के पैरों में अपना सिर रखकर उनकी सेवा करने वाली दासी बताया है।
3. श्रीकृष्ण गाय चराने के लिए मना करते हैं, कि सभी ग्वाल-बाल मुझसे ही गायों को घिरवाते हैं।
4. कबीर के अनुसार ईश्वर मंदिर और मस्जिद में नहीं मिलते हैं।
5. तुलसीदास ने श्रीराम को कृपानिधि जैसा दानी बताया है जो दीनों पर दया करने वाले हैं।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख)
4. (क) 5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. मीरा ने 'हरि तुम हरो जनो की पीर' पद में श्रीकृष्ण जी की उन विशेषताओं को बताया है, कि श्रीकृष्ण भगवान ने द्रोपदी की लाज को बचाने के लिए तुरंत उसका चीर बढ़ाया, भक्त प्रह्लाद के लिए नरसिंह का रूप धारण कर हिरण्यकश्यप को चीर डाला और जल में डूबते हुए गजराज को बाहर निकाला।
2. श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा को समझाते हुए कहते हैं, कि हे माँ! मैंने माखन नहीं खाया है। सुबह होते ही मुझे गायों के पीछे मधुवन में भेज दिया। 'चार पहर वंशीवट भटक्यो' का आशय है। सुबह से शाम तक चार पहर होते हैं जो मैं गाय चरा रहा था।
3. कबीरदास जी ने ईश्वर का निवास मानव के हृदय में बताया है। मनुष्य जब साँस लेता है, तो ईश्वर प्रत्येक साँस में समाया हुआ है।
4. भगवान राम को तुलसीदास जी ने उदार कहा है। इसकी पुष्टि में पद पर आधारित कुछ तर्क इस प्रकार दिए गए हैं–

(i) मुनि तथा ज्ञानी पुरुष वैराग्य धारण करके उसकी गति पाने के लिए तरसते हैं, वही गति श्री राम ने अपनी भक्ति में लीन सबरी तथा गीघराज को प्रदान की थी।

(ii) जो संपत्ति रावण ने अपने दस शीश अर्पण करके शिवजी से प्राप्त की थी, वही संपत्ति श्रीराम ने बिना संकोच के विभीषण को दे दी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. यह पंक्ति मीराबाई द्वारा रचित है जिसमें उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से भक्तों के दुखों को दूर करने की प्रार्थना की है। इसका आशय है कि उन्होंने द्रोपदी, प्रह्लाद और गजराज जैसे भक्तों के कष्टों को दूर किया, उसी प्रकार वे मीरा के भी दुख हरें।
2. यह पंक्ति सूरदास द्वारा रचित पदों से ली गई है, जिसमें बाल कृष्ण अपनी माता यशोदा से शिकायत करते हैं कि गोपियाँ उन्हें चिढ़ाती हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कृष्ण माँ की सरलता और भोलेपन का वर्णन कर रहे हैं, जो उनकी बातों पर आसानी से विश्वास कर लेती हैं।
3. यह प्रसिद्ध पंक्ति संत कबीरदास की है, जिसका आशय है कि ईश्वर को मंदिरों में, मस्जिदों में या तीर्थ स्थलों पर खोजने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर तो हर प्राणी के हृदय में ही निवास करते हैं। सच्चे मन से स्मरण करने पर वह हर पल हमारे पास ही होते हैं।
4. यह पंक्ति तुलसीदास जी की विनय पत्रिका से ली गई है, जिसमें उन्होंने भगवान राम की उदारता का वर्णन किया है। इसका आशय है कि इस संसार में भगवान राम जैसा कृपालु और उदार कोई नहीं है, जो बिना किसी स्वार्थ के भक्तों पर कृपा करते हैं।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. तुलसीदास 3. लकुटि-कमरिया
2. काबे कैलास 4. हिरणाकुष

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)।

- **सही मिलान**

(क)		**(ख)**
द्रोपदी	–	चीर
दासी मीरा	–	लाल गिरधर
लकुटि	–	कमरिया
काबे	–	कैलास
जोग	–	बैराग
गीघ	–	सबरी

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. हमारे अनुसार ईश्वर का निवास प्रत्येक प्राणी के हृदय में हैं।
2. मीरा के आराध्य केवल गिरधर गोपाल हैं, लेकिन हमारे आराध्य शिव, कृष्ण, राम आदि सभी आराध्य हैं क्योंकि हम सनातनी है। इसी कारण सभी को अपना समझते हैं।
3. पद में राम को उदार बताया है। राम उदारवादी हैं तथा मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, वे दीनों पर दया करने वाले, कृपानिधि एवं करुणा के सागर हैं।
4. जब हम पर कोई झूठा इल्जाम लगाता है, तब हम उस झूठ को सच साबित करके दिखाते हैं। ऐसे लोगों से प्रेम करेंगे उनसे द्वेष नहीं करेंगे। ऐसा करने पर वह स्वयं जान लेगा कि झूठा कौन है? उसकी आत्मा उसे ही धिक्कारेगी। सत्य साबित करने की कोशिश।

- **भाषा आधारित**

1. तद्‌भव शब्दों के तत्सम रूप–

(क) शीश (ख) वस्त्र

(ग) मातृ, माँ (ङ) कर्म

(घ) नृत्य (च) योग

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द–

कैलास, कबीर, जन, मधुबन, हरि।

3. अनेकार्थी शब्दों के विभिन्न अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग–

(क) हरि – विष्णु भगवान, नाम, बन्दर, श्रीकृष्ण

वाक्यांश– श्री हरि (विष्णु भगवान) क्षीर सागर में निवास करते हैं।

(ख) गज – हाथी, लम्बाई-चौड़ाई की माप

वाक्यांश – गज का उद्धार श्रीकृष्ण भगवान ने किया।

(ग) विधि – विधाता, कानून

वाक्यांश – कानून के हाथ बड़े लम्बे होते हैं।

(घ) गति – काल, चाल, पृथ्वी की गति, समय

वाक्यांश– मन की गति अति तीव्र होती है।

4. विपरीतार्थक शब्द–

(क) सुख (ख) स्वामी

(ग) अनुदार (घ) निर्दयी

(ङ) मूर्ख (च) दूर

क्रियाकलाप-आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

14. बूढ़ी काकी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** बुढ़ापा, तिलमिला, मेहमान, अपशकुन, सब्जबाग, स्वभाव, धैर्य, परीक्षक, क्षुधातुर।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. बूढ़ी काकी ने अपनी सारी संपत्ति अपने भतीजे बुद्धिराम के नाम कर दी।
2. लाड़ली की माँ का स्वभाव तीखा था, मगर ईश्वर से डरती थी।

3. बुद्धिराम जब तक उन पर आँच न आए, तब तक वे सज्जन आदमी रह पाते थे।
4. लाड़ली द्वारा लाई गई पूड़ियों को खाकर बूढ़ी काकी की भूख और इच्छा को और प्रबल/उत्तेजित कर दिया था।
5. बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही है। इस दृश्य को देखकर लाडली की माँ पश्चाताप और डर के कारण बेचैन हो गई।

- **लिखित**

1. बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी। आज उसके बड़े बेटे सुखराम का तिलक आया है। यह उसी का उत्सव है।
2. अचानक रूपा ने काकी को कड़ाह के पास देखा तो वह जल-भुन गई और अपना क्रोध रोक न सकी। उसे इसका भी ध्यान न रहा कि पड़ोसिनें बैठी हुई हैं, मन में क्या सोचेंगी। लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। वह काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से पकड़कर बोली, "कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था? अभी भगवान का भोग भी नहीं लगा, मेहमानों ने भी अभी नहीं खाया, तब तक भी धैर्य न हो सका?"
3. काकी को देखते ही पंडित बुद्धिराम क्रोध से तिलमिला गए। लपककर उन्होंने काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए उन्हें कोठरी में लाकर धम्म से पटक दिया।
4. बूढ़ी काकी चुपचाप अपनी कोठरी में सरकती हुई चली गई और पछताने लगी, उन्हें रूपा पर क्रोध आया, अपनी जल्दबाजी पर ही दुख था। 'सच ही तो है, तब तक भगवान को भोग न लगेगा, मेहमान भोजन न कर चुकेंगे, घर वाले कैसे खायेंगे। मुझसे इतनी देर भी न रहा गया। सबके सामने पानी उतर गया। अब जब तक कोई बुलाने नहीं आयेगा, मैं नहीं जाऊँगी।
5. भोले-भाले बच्चों की भाँति जो मिठाइयाँ खाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाते हैं, काकी सब भुलाकर बैठी हुई मिठाइयाँ और पकवान खा रही थी। उनके एक-एक रोंये से सच्ची दुआएँ निकल रही थीं। रूपा इस अनोखे-अनुपम दृश्य का आनंद लेने में मग्न थी।

- ***अपनी समझ से***

सही विकल्प–

1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (क), 5. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. लाड़ली ने बूढ़ी काकी के लिए अपने हिस्से की पूड़ियाँ पिटारी में छुपा लीं। इस कथन में लाड़ली के प्रेम एवं डर का भाव जाग्रत होता है। वह काकी से प्रेम तथा उदारता का भाव रखती है, किन्तु माँ का भय उसे सता रहा है।
2. रूपा स्वभाव से तीखी थी। लेकिन जब उसने देखा कि काकी झूठी पत्तलों से पूड़ी निकाल कर उसके टुकड़े खा रही है। तब रूपा ने ईश्वर को सम्बोधित करते हुए कहा। मुझसे आज बड़ी भूल हो गई, उसका बुरा न मानना। काकी भगवान से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें, तब रूपा थाली में पूड़ी पकवान लाई, जिसे काकी ने आशीर्वाद देते हुए खाया, रूपा ईश्वर से अधिक डरती थी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. जैसे लू के गर्म झोंके से वाटिका के सभी पेड़ों का पतझड़ हो जाता है, ठीक वैसे ही बूढ़ी काकी ने जो आस लगाई थी, वह एक ही झटके में विनाश को प्राप्त हो जाती है। काकी की सभी इच्छाएँ नष्ट हो गयीं।

2. वृद्धावस्था मानव जीवन की एक ऐसी अवस्था है, जिसे हम बुढ़ापा कहते हैं। जिस प्रकार बचपन में हर वस्तु के लिए मचलता है तथा अच्छी-अच्छी चीजों की आवश्यकता होती है वैसे ही मानव की बुढ़ापे में हर वस्तु की इच्छा प्रबल हो जाती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. बच्चों 2. काकी
3. अभिप्राय 4. अधीर मन
5. अपशकुन

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

पाठ से आगे

मन के विचार

1. परिवार में हमें अपने बड़े-बुजुर्गों के साथ सभ्यता का व्यवहार करना चाहिए। यदि हम उनके साथ गलत व्यवहार करेंगे तो आने वाले भविष्य में हमारी संतान भी हमारे साथ वही बुरा व्यवहार करेगी।
2. बूढ़ी काकी यदि अपनी संपत्ति बुद्धिराम को न लिखती तो कहानी में बहुत बड़ा बदलाव होता और वह एक गरीब व्यक्ति होता।

1. मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों का प्रयोग–

(क) अर्थ – मन का चंचल होना

वाक्य प्रयोग– पूड़ियों का स्वाद याद करके काकी के हृदय में गुदगुदी-सी होने लगी।

(ख) अर्थ – झूठे वादे करना/या धोखा देना

वाक्य प्रयोग– बुद्धिराम ने खूब लंबे-चौड़े वादे किए, परन्तु वे सब वादे सब्जबाग थे।

(ग) अर्थ – मन की बात कहना

वाक्य प्रयोग– यदि द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगती।

(घ) अर्थ – अधिक क्रोधित होना

वाक्य प्रयोग – बूढ़ी काकी जब राग अलापने लगती तो बुद्धिराम आग बबूला हो जाता था।

(ङ) अर्थ – रोने का मन करना

वाक्य प्रयोग– काकी विचार करने लगी, कि मेरा ऐसा भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें? यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे से हूक-सी उठने लगी।

2. विशेषण शब्द–

(क) बूढ़ी (ख) लाड़ली

(ग) झूठी (घ) शरारती

(ङ) अनोखे-अनुपम

(च) सच्ची

3. उद्देश्य	विधेय
(क) काकी ने	पिटारी को फिर टटोला।
(ख) रूपा ने खींचकर	काकी को कोठरी में पटक दिया।
(ग) बूढ़ी काकी	गला फाड़कर रोती-चिल्लाती।
(घ) मेहमान मंडली	आँगन में भोजन कर रही थी।
(ङ) काकी ने पूछा	क्या तुम्हारी माँ ने दी है।

4.	उपसर्ग	मूलशब्द
(क)	सु	वास
(ख)	सु	गंध
(ग)	निष्	ठुर
(घ)	नि	मग्न
(ङ)	दुर्	गति
(च)	अव	रुद्ध

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

15. एक कुत्ता और एक मैना

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** श्री निकेतन, अधिकांश, गुरुदेव, कोलकाता, नियमित, सुराख, विश्वास, करुण, वैराग्य

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने का निश्चय किया।
2. गुरुदेव ने कुत्ते को लक्ष्य करके कविता लिखी थी।
3. श्री निकेतन के ऊपरी तल्ले पर पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियों का ही साधन था।
4. गुरुदेव की चिंता-भस्म के साथ-साथ कुत्ता गया था।

5. कितना करुण है उसका गायब हो जाना। पंक्ति में मैना के गायब होने की बात कही गई है।

- **लिखित**

1. गुरुदेव के पास एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, "देखते हो, यह पथ भ्रष्ट है, रोज फुदकती है, ठीक यही आकार। मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई देता है।
2. कुछ और पहले की घटना से लेखक मैना पक्षी को करुण नहीं मानता है, क्योंकि मेरा अनुभव था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं।
3. गुरुदेव ने अपने पालतू कुत्ते के बारे में लेखक को बताया। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और गुरुदेव के पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने लेखक की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने ये आ गए। इन्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो इनके चेहरे पर कैसी शांति दिखाई दे रही है।"
4. लेखक जब गुरुदेव की उस 'आरोग्य' कविता को पढ़ता है तब मेरे सामने श्री निकेतन के तितल्ले की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है कि जब गुरुदेव की चिता-भस्म कोलक. ाता से आश्रम में लाई गई, उस समय भी न जाने किस सहज-बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया। कलश के पास चुपचाप बैठा रहा और आश्रमवासियों के साथ उत्तरायण तक अंतिम विदा देने भी गया।
5. एक बार मैं (लेखक) सवेरे-सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित हुआ था। उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, देखते हो, यह पथ-भ्रष्ट है, रोज फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई देता है।" गुरुदेव ने कह न दिया, होता तो मुझे उसका करुण भाव एकदम नहीं दिखता।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख)
4. (क) 5. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. बिना बताए दो मील दूर कुत्ते का श्री निकेतन स्वयं पहुँच जाना, किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया कि उसके स्नेह दाता यहाँ से दो मील दूर है और फिर भी वह पहुँच गया। कुत्ता एक स्वामिभक्त होता है। अपने मालिक के स्नेह का भूखा रहता है, और अपने मालिक की खुशबू को भी बखूबी पहचानता है।
2. जब गुरुदेव के पास लेखक मिलने आया, तब तो लँगड़ी मैना को फुदकता हुआ देखकर गुरुदेव ने कहा, देखते हो, यह पथ-भ्रष्ट है, यह यहाँ पर रोज फुदकती है इसी जगह पर फुदकती है। मुझे इसकी चाल में एक करुण वेदना की झलक दिखाई पड़ी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. यह कथन किसी के लापता होने पर गहरा शोक व्यक्त करता है। "कितना करुण है उसका गायब हो जाना" का अनुवाद है "उसका गायब होना कितना दयनीय।" यह किसी व्यक्ति या वस्तु की अचानक अनुपस्थिति से जुड़े गहरे दुख और हानि की भावना को दर्शाता है, जो सहानुभूति और त्रासदी की भावना को जगाता है।

2. कवि को पहले किसी के दुख का अहसास नहीं था, लेकिन बाद में उसने उनके सबसे गहरे दर्द को महसूस किया। "कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार इस कवि की आँखें उस बेचारी के मर्म स्थल तक पहुँच गई" का अर्थ है "कैसे मैंने उसे देखने के बाद भी नहीं देखा, और कैसे इस कवि की आँखें उस गरीब व्यक्ति के मूल तक पहुँच गई।" इसका तात्पर्य अज्ञानता या उदासीनता की स्थिति से गहन अंतर्दृष्टि के क्षण में संक्रमण है, जहाँ वक्ता अचानक उस व्यक्ति के छिपे हुए दर्द या सच्चे सार को समझ जाता है जिसे उसने अनदेखा कर दिया था। "अस्तित्व का मूल" आंतरिक भावनाओं या पीड़ा को संदर्भित करता है।

3. विषय स्नेह की अनुभूति में गहराई से लीन है। पंक्ति "वह अनिश्चय मुंडाकर अपने रोम-रोम में उस स्नेह का अनुभव करने लगा" का अनुवाद है। "उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने शरीर के हर छिद्र में उस स्नेह को महसूस करना शुरू कर दिया।" यह प्रेम या स्नेह की भावना में पूर्ण और गहन तल्लीनता का वर्णन करता है, जो गहरे भावनात्मक जुड़ाव या आराम के एक ऐसे क्षण का सुझाव देता है, जहाँ व्यक्ति पूरी तरह से सकारात्मक भावना में मौजूद होता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. दर्शन
2. कुत्ता
3. चिड़ियों
4. अक्ल
5. करुण

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. मूक प्राणी (बेजुबान जानवर) वास्तव में मनुष्य से अधिक संवेदनशील होते हैं क्योंकि वे अपनी पीड़ा, डर और प्रेम को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते, फिर भी दर्द, दु:ख व खुशी को गहराई से महसूस करते हैं। उनकी मासूमियत और निस्वार्थ प्रेम उन्हें इंसानों की तुलना में अधिक भावनात्मक रूप से आहत होने योग्य बनाता है और वे अक्सर मनुष्यों की भावनाओं को बेहतर समझते हैं। इसलिए मूक प्राणियों के प्रति करुणा और दया रखना आवश्यक है, क्योंकि वे भी हमारे जैसे ही चेतन प्राणी हैं।
2. स्बावलंबन और आत्मनिर्भरता जीवन के आधारभूत गुण हैं जो व्यक्ति को न केवल मानसिक रूप से मजबूत बनाते हैं, बल्कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र कर सफलता की ओर ले जाते हैं। ये गुण आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और संकट में धैर्यपूर्वक समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करते हैं, जिससे जीवन अधिक सुखी और सार्थक बनता है। संक्षेप में, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ एक सुखी और सफल जीवन की नींव है।
3. कुत्ते अत्यधिक वफादार, बुद्धिमान, सामाजिक और स्नेहपूर्ण स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। ये मनुष्यों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध बनाते हैं, आज्ञाकारी होते हैं और सुरक्षात्मक प्रवृत्ति (रखवाली) रखते हैं। कुत्तों में उत्सुकता, चंचलता और खेलकूद के प्रति प्रेम होता है और आसानी से प्रशिक्षित किया जा सकता है।

- **भाषा आधारित**

1. तीन-तीन पर्यायवाची शब्द–

(क) कुत्ता – कुक्कुर, शुनक, श्वान।

(ख) आँख – चक्षु, नयन, नेत्र।

(ग) आदमी – नर, मानव, मनुष्य

(घ) घर – गृह, आवास, निवास।

(ङ) स्त्री – महिला, औरत, नारी।

2. व्यक्तिवाचक, जातिवाचक एवं भाववाचक संज्ञा के तीन-तीन उदाहरण–

(क) व्यक्तिवाचक – आलोक, रामायण, दिल्ली

(ख) जातिवाचक – मजदूर, हिन्दू, इंसान

(ग) भाववाचक – मिठास, बचपन, वीरता

3. काल तीन प्रकार के होते हैं– वर्तमान काल, भविष्यत् काल एवं भूतकाल:

निम्नलिखित वाक्य को तीनों वाक्यों में लिखिए–

मैना ने मधुर वाणी में गाना शुरू कर दिया।

वर्तमान काल : मैना ने मधुर वाणी में गाना शुरू कर दिया।

भविष्यत् काल : मैना मधुर वाणी में गाना शुरू करेगी।

भूतकाल : मैना मधुर वाणी में गाना शुरू कर चुकी थी।

4. गद्यांश में उचित विराम चिह्न–

"कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार कवि की आँखें उस बेचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गईं" सोचता हूँ तो हैरान

हो जाता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले जाया करती है उस डाल के कोने में जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है, नींद तोड़ने वाला संध्यातारा। कितना करुण है, उसका गायब हो जाना।

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

16. मकर संक्रान्ति

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** अनुष्ठान, महाभारत, उत्तरायण, सरस्वती, कल्पवास, तमिलनाडु, उद्धार, धूमधाम।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मकर-संक्रांति पर्व अंग्रेजी के जनवरी महीने में आता है।
2. अर्द्ध कुंभ 6 वर्ष बाद आयोजित होता है।
3. गढ़वाल में मकर-संक्रांति को खिचड़ी संक्रांति के नाम से जाना जाता है।
4. मकर-संक्रांति पर्व पर राजस्थान के जयपुर शहर में पतंग की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।
5. भीष्म पितामह ने अपने प्राण मकर-संक्रांति के दिन त्यागे थे।

- **लिखित**

1. मकर-संक्रांति के दिन से मौसम में बदलाव आना प्रारंभ हो जाता है। इसी कारण रातें छोटी व दिन बड़े होने लगते हैं। सूर्य के उत्तरी गोलार्द्ध की ओर जाने के कारण ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ हो जाता है। सूर्य के प्रकाश में गर्मी और तपन बढ़ने लगती है। इसके फलस्वरूप प्राणियों में चेतना और कार्य शक्ति का विकास होता है।
2. गंगा सागर के इस मेले के पीछे एक पौराणिक कथा है कि आज के ही दिन गंगा जी ने स्वर्ग से अवतरित होकर भागीरथ के पीछे-पीछे चल कर कपिल मुनि के आश्रम में जाकर राजा सगर के साठ हजार शापग्रस्त पुत्रों का उद्धार किया था। इस घटना की स्मृति में इस तीर्थ पर गंगा सागर के नाम से मेले का आयोजन होने लगा। यहाँ से गंगा सागर में मिल जाती है।
3. राजस्थान में इस दिन महिलाएँ तिल तथा चूरमे के लड्डू बनाकर बुजुर्गों को देती हैं और आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। इस राज्य में मुख्य रूप से दाल, बाटी, चूरमा, खीर, पूरी आदि का भगवान को भोग लगाकर भोजन किया जाता है। कई जगहों पर दंगल का आयोजन भी किया जाता है। इस पर्व पर जयपुर में पतंग प्रतियोगिताएँ भी होती हैं।
4. गंगा-जमुना और सरस्वती के संगम पर तीर्थराज प्रयाग में मकर-संक्रांति पर्व के दिन सभी देवी-देवता, अपना स्वरूप बदलकर स्नान के लिए आते हैं। इस मौके पर प्रयाग के संगम स्थल पर प्रत्येक साल लगभग एक महीने तक माघ मेला लगता है, जहाँ लोग कल्पवास भी करते हैं। बारह साल में एक बार कुंभ मेला लगता है। यह भी लगभग एक महीने तक रहता है।
5. दक्षिण भारत में मकर-संक्रांति को पोंगल के रूप में मनाया जाता है। इस दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनाई जाती है। इस मौके पर बैलों की लड़ाई होती है। जिसे 'मट्टू पोंगल' कहते हैं। तमिलनाडु में तमिल पंचांग का नया साल पोंगल ही होता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प –

1. (ग) 2. (क) 3. (घ)
4. (ख) 5. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. मकर-संक्रांति भारत के प्रमुख पर्वों में से एक है। मकर-संक्रांति विभिन्न रूपों में पूरे भारतवर्ष में मनाई जाती है। यह त्योहार जनवरी महीने की चौदह तारीख को मनाया

जाता है। इस पर्व पर महिलाएँ तिल के लड्डू बनाकर खीर-पूड़ी बनाकर अपने बुजुर्गों एवं मान्य पक्ष के लोगों को बुलाकर खिलाती हैं। भगवान का भोग लगाकर उनको भोजन कराते हैं तथा दक्षिणा में पैसे, कपड़े, शाल, जूते अनेक प्रकार की सामग्री सहित दाल और चावल तथा गजक, फल आदि देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन बच्चे पतंग भी उड़ाते हैं।

2. भारत विविधताओं का देश होते हुए भी इसमें अनूठी एकता समाहित है। संक्रांति के इस पर्व को विभिन्न नामों से जाना जाता है। पंजाब में लोहड़ी पर्व, उत्तराखण्ड में उत्तरायणी, गुजरात में उत्तरायण, केरल में पोंगल, गढ़वाल में खिचड़ी संक्रांति के नाम से मनाया जाता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. मकर संक्रांति के दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान का बहुत महत्व होता है क्योंकि जब सूर्य देव धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तब उत्तरायण शुरू होता है। इस दिन गंगा, यमुना और गोदावरी जैसी नदियों में लोग स्नान करते हैं। हिन्दू धर्म मान्यता है कि आज के दिन दान करने से उसका फल सौ गुना बढ़ जाता है। सूर्य की उपासना, गायत्री मंत्र का जप और सूर्य अर्ध्य देना कल्याणकारी होता है। अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए इस दिन श्राद्ध और तर्पण करने से पुण्य प्राप्ति होती है।

2. मकर-संक्रांति से मौसम में बड़ा बदलाव शुरू होता है क्योकि सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश कर उत्तरायण होते हैं। इस दिन से दिन लम्बे और रात छोटी होने लगती है, जिसमें धूप तेज होती है। ठंड धीरे-धीरे कम होने लगती है। यह मौसम में गर्मी की शुरुआत और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. तमिलनाडु
2. राजस्थान
3. मट्टू
4. साठ हजार
5. भीष्म पितामह

- **सही-गलत**

1. (✕), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✕)।

- **सही मिलान कीजिए–**

(क)	(ख)
पंजाब	लोहड़ी
गढ़वाल	खिचड़ी-संक्रांति
उत्तराखण्ड	उत्तरायणी
गुजरात	उत्तरायण
केरल	पोंगल

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. पर्वों और त्योहारों का हमारे जीवन में बहुत महत्व माना जाता है। मकर-संक्रांति का पर्व पूरे भारतवर्ष में अनूठे प्रकार से मनाया जाने वाला पर्व है। मकर-संक्रांति के साथ अनेक पौराणिक तथ्य जुड़े हुए हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ एकादशी का पर्व, दशहरे में गंगा स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान करने तथा शिवरात्रि का दिन भी एक हमारा पर्व है, जिसमें हम व्रत जागरण आदि करके पौराणिक परंपरा को निभाते हैं। उसी प्रकार होली, दीपावली तथा रक्षाबन्धन आदि के पीछे भी अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। इनके अलावा हमारे देश में अनेक त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।

2. हमारे देश में तीर्थ-स्थान ही हमारी संस्कृति के संवाहक होते हैं। उसमें चाहे प्रयाग, केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि अनेक तीर्थ स्थानों का हमारी संस्कृति से भी अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जो हमारी संस्कृति का जोर-शोर से प्रसार करती हैं। हमारी संस्कृति ही हमारे अंदर अनेक गुणों को समाहित करती है।

- **भाषा आधारित**

1. वाक्य में विराम चिह्न का प्रयोग–

(क) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(ख) राधा, निधि और सुधा विद्यालय जा रही हैं।

(ग) हमारी अध्यापिका का नाम सुषमा शर्मा है।

(घ) महाकुंभ कितने साल बाद आता है?

(ङ) वाह! आपने तो गायनकला में कमाल कर दिया।

2. शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए–

अनुष्ठान, उत्तरायण, उदार, तमिलनाडु, दान, पावन, पौराणिक, पोंगल, प्रथा, फलीभूत, भारत, शापग्रस्त, संस्कृति, सागर।

3. शब्द-समूहों के लिए एक शब्द–

(क) पौराणिक

(ख) शापित

(ग) संगम (प्रयाग)

(घ) अनुयायी

(ङ) आस्तिक

4. शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) हमारा भारत महान है।

(ख) ताजमहल की शोभा अनुपम है।

(ग) इस दिन स्नान, दान, जप, तप, श्राद्ध तथा अनुष्ठान का बहुत महत्व है।

(घ) भारत में अनेक पर्व एवं त्योहार मनाये जाते हैं।

(ङ) भारत विविधताओं का देश होते हुए भी इसमें अनूठी एकता समाहित है।

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

17. दान का बल

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

ऋतु, प्रकृति, आत्मघात, डालियाँ, जनजीवन, अभिमान, स्नेह।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. दान का बल कविता के अन्तर्गत प्रकृति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।
2. अपने दिए हुए दान को हम त्याग मान लेते हैं।
3. कवि ने दान को (बल) त्याग माना है।
4. हमें जीवन में दान अवश्य करना चाहिए।
5. व्यक्ति मृत्यु से पहले वो मरते हैं, जिन्हें ज्ञान नहीं वे देकर भी मरा माना जाता है।

- **लिखित**

1. अहंकारवश जो कुछ भी देता है, उसे वह अपने स्वप्न का त्याग मान लेता है।
2. वृक्ष अपने पत्तों, फलों का त्याग करते हैं ताकि वे स्वस्थ रहें और नए पत्ते तथा फल आ सकें।
3. नदी फल देती है और जल वाष्प बनकर बादल बनाता है। बादल फिर वर्षा के रूप में जल देकर नदी को भरते हैं। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।
4. इस पंक्ति का भाव है कि त्याग से ही विकास होता है। जब वृक्ष पुराने पत्तों और फलों का त्याग करता है, तभी वह स्वस्थ रहता है और नए फल-फूल उत्पन्न होते हैं।
5. जीवन को झरना कहा गया है, क्योंकि झरना निरंतर बहता रहता है उसी प्रकार जीवन भी निरंतर कर्म और त्याग से आगे बढ़ता रहता है।

- **प्रत्यास्मरण**

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर–

1. जीवन का अभियान दान-बल से चलता है।
2. प्रेम तब अधिक बढ़ता है जब मानव रूपी दीपक अधिक जलता है अर्थात् जब निस्वार्थ भाव से प्रेम करते हैं।
3. व्यक्ति हँसकर या रोकर कुछ देता है। दान करना कहते हैं।
4. व्यक्ति अहंकार के वशीभूत होकर जो कुछ भी देता है, उसे अपना त्याग मान लेता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–

1. (ग) 2. (क) 3. (ग)
4. (क) 5. (घ)

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. जीवन की कार्यवाही दान बल से लगातार चलती रहती है, जो दान देते हैं। वे मरने के बाद भी लगातार उसका लाभ प्राप्त करते हैं और दान के बल पर ही उसे मुक्ति मिलती है।

2. दान जगत का प्राकृतिक धर्म है, मनुज व्यर्थ ही डरता है। प्रकृति ने सूर्य, नदी, झरने, बादल, पेड़, आदि सभी को बलिदान की भावना से प्रेरित किया है। सूर्य अपना प्रकाश, नदी, बादल, झरने पानी देते हैं, तो पेड़ हमें फल व औषधियाँ दान में देते हैं। ये सभी परोपकारी हैं। अपनी ऊर्जा दूसरों को दान में देते हैं।

3. कवि का आशय है कि जो अपना सब कुछ बिना सोचे समझे दान देते हैं। उन्हें वही दान किया हुआ बल मृत्यु होने पर साथ जाता है और कुछ भी मानव के साथ नहीं जाता और उसके जीवन में वही बचता है।

- **सोच-समझकर**

1. वृक्ष कबहू नहिं फल भखे, नदी न संचय नीर।

   परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर।।

   प्रकृति ने हमेशा मानव प्राणी मात्र के लिए सब कुछ दान में दे दिया है। उसे तनिक भी घमण्ड नहीं होता, वह अपने समय पर देती ही रहती है। लेकिन दान में दिया हुआ सामान मानव पछतावा करता है या बार-बार उसका बखान करता है, तो उसे अहंकार हो जाता है। वह दूसरों को अपने सामने कुछ नहीं समझता है।

2. कविता में दान को जीवन का प्राकृतिक धर्म कहा गया है क्योंकि मानव न कुछ साथ लाया और न ही लेकर जायेगा ऐसा मानने वाला स्वयं अपने परिवार से संस्कार प्राप्त करता है। प्रकृति मानव को सब कुछ बदले में नहीं देती। प्रसन्नतापूर्वक अपना धर्म मानकर दान करती है।

3. जो समय पर स्वयं अपना सब कुछ दान करते हैं उनका दान बचता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. वारि कि पाकर उसे सुपूरित वन हो,
2. बरसे मेघ, भरे फिर सरिता, उदित नया
3. के साथ जगजीवन का ऋतु नाता है,
4. जो देता जितना बदले में उतना ही।

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✓), 3. (✕), 4. (✓), 5. (✓)।

- **सुमेलन–**

(क)	**(ख)**
नदी	पानी
वृक्ष	फल
दीपक	ज्योति
बादल	बारिश
प्रकृत धर्म	दान

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. दान प्रकृति का नियम है। जीवन का अभियान दान बल से चलता है। दान के त्याग से ही विकास होता है। दान धर्मों में एक पवित्र कार्य माना जाता है, जिससे जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति और मोक्ष प्राप्त करने में मदद मिलती है। जिससे सामाजिक लाभ, व्यक्तिगत संतुष्टि और स्वास्थ्य लाभ तथा कर्मों का शोधन होता है।

2. प्रकृति हमें सीख देती है कि हमें निस्वार्थ भाव से दूसरों को देना तथा सभी के साथ परोपकारी भाव एवं दयालु होना सिखाती है। कि किस प्रकार हमें धैर्यपूर्वक निरंतर लगे रहना है, निस्वार्थ सेवा करना एवं जीवन के लाभ और आपस में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना यही प्रकृति हमें सिखाती है।

- **भाषा आधारित**

1. कविता से पाँच तत्सम शब्द–

1. स्नेह, 2. ज्योति, 3. आत्मज्ञान, 4. वृक्ष, 5. आत्मघात।

2. पर्यायवाची शब्द–

(क) अहंकार – घमंड, अभिमान, दर्प
(ख) वृक्ष – तरु, पेड़, द्रुम
(ग) सरिता – नदी, तटिनी
(घ) वन – कानन, जंगल, उपवन
(ङ) मेघ – बादल, घन
(च) देव – सुर, ईश्वर
(छ) मनुज – मानव, इंसान

3. एक शब्द के लिए वाक्यांश–

(क) मुकुट में लगा नग एक बहुमूल्य हीरा है।

(ख) प्रकृति एक जीवन्त और सक्रिय शक्ति है।

(ग) जिसमें घमंड होता है वह अहंकारी होता है।

(घ) राम नाम अमूल्य निधि है।

(ङ) गाय, भैंस, बकरी आदि एक शाकाहारी प्राणी है।

4. तुकांत शब्द कविता से–

(क) करते - मरते
(ख) चलता - जलता
(ग) देते - लेते
(घ) झरना - मरना
(ङ) नाता - पाता
(च) आएँ - समाएँ

क्रियाकलाप आधारित

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

जाँच-पत्र – 1

1. प्रश्नों के उत्तर–

(क) इस पंक्ति का तात्पर्य है कि ईश्वर और बड़े बुर्जुगों का आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ एक सुरक्षा कवच की तरह रहता है।

(ख) पानी के प्रदूषित होने का मुख्य कारण कारखानों का गंदा पानी और कचरा नदियों में बहाना है। इसे कचरा न डालकर और जल शोधान के द्वारा निर्मल रखा जा सकता है।

(ग) यात्रा शुरू होने के बाद बस पहली बार इसलिए रूकी थी क्योंकि उसकी पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था।

(घ) सजनसिंह ने सुभागी के सामने प्रस्ताव रख कि, "मेरी इच्छा है कि तुम मेरे घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो।"

(ड़) कैकेयी ने मंथरा की बातों में आकर और अपने पुत्र भरत को राजा बनाने के मोह में उन्होंने महल में उत्पात मचाया।

2. गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर–

(क) लोग बीहड़ वनों को एक अदृश्य डोर के सहारे पार कर जाते हैं।

(ख) युवक के पिता तभी गुजर गए थे, जब युवक बहुत छोटा था।

(ग) वृद्ध इस बात का इंतजार कर रहे थे कि युवक बड़ा होकर उनका सहारा बने और कारोबार संभाले।

(घ) पुत्र ने जब वृद्ध को गले लगाया, तब वह दीवार पर टँगे एक धुँधले चित्र को देखकर मुस्करा रहे थे।

(ड़) वृद्ध ने युवक से कारोबार में हाथ बँटाने को कहा।

3. सही विकल्प–

(क) (iii)
(ख) (ii)
(ग) (iii)
(घ) (iii)

4. रिक्त स्थान पूर्ति–

(क) संवाहक
(ख) छेद
(ग) राक्षसों
(घ) मेरा

5. सत्य-असत्य–

(क) ✘
(ख) ✘
(ग) ✘
(घ) ✘

6. पर्यायवाची शब्द–

(क) तलवार–असि, खड्ग
(ख) सुमन–फूल, पुष्प

(ग) राजा–नृप, नरेश

(घ) पेड़–वृक्ष, तरु

7. **लिंग परिवर्तन–**

(क) वृद्धा

(ख) युवती

(ग) बैल

(घ) बछिया।

8. **संधि-विच्छेद–**

(क) मनः + हर = विसर्ग संधि

(ख) लोक + उक्ति = गुण संधि

(ग) परि + आवरण = यण संधि

(घ) दुः + उपयोग = विसर्ग संधि

9. **तत्सम शब्द–**

(क) चक्षु

(ख) वृद्धत्व

(ग) मुख

(घ) पाद

10. **वाक्य-प्रयोग–**

(क) भवान राम का व्यक्तित्व अत्यंत प्रियदर्शन था।

(ख) सूरज ढलने के बाद आकाश की चमक निस्प्रम हो गई।

जाँच-पत्र – 2

1. **प्रश्नों के उत्तर–**

(क) चंद्रशेखर आजाद की प्रतिज्ञा थी कि वे कभी जिंदा नहीं पकड़े जाएँगे। उन्होंने इस प्रतिज्ञा को अंतिम गोली स्वयं को मारकर पूरा किया।

(ख) लेखक ने ठेले पर लदी बर्फ में हिमालय की छाया देखी।

(ग) अरुणा और चित्रा सहेलियाँ थीं और एक ही छात्रावास में रहती थी।

(घ) हमारे दृष्टिकोण के अनुसार, ईश्वर सब साँसों की साँस में यानि कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करता है।

(ड़) जब लाड़ली की माँ (रूपा) ने देखा कि बूढ़ी काकी मेहमानों की छोड़ी हुई पत्तलों से जूठन बटोरकर खा रही हैं, तो यह हृदय विदारक दृश्य देखकर वह पश्चाताप और ईश्वरीय दंड के डर से बेचैन हो गई।

2. **पंक्तियाँ रिक्त स्थान पूर्ति–**

(क) सितारा, प्यारा

(ख) अंबर

(ग) मदिरालय, प्याले

(घ) मधु, मादकता।

3. **सही विकल्प–**

(क) (iii)

(ख) (i)

(ग) (iii)

(घ) (iv)

4. **सत्य-असत्य–**

(क) ✗

(ख) ✗

(ग) ✗

(घ) ✓

5.

(अ)	(ब)
लकुटि	कमरिया
पंजाब	लोहड़ी
बादल	बारिश
कमर	ढाल
नीड़	तृण-तृण

6. **एक शब्द के लिए वाक्यांश–**

(क) जिसका कोई मूल्य न आँका जा सके।

(ख) वह व्यक्ति जिसे अपने आप पर बहुत घमंड हो।

(ग) जहाँ दो या दो से अधिाक नदियों का मिलन होता है।

(घ) पुराणों से संबंधित या प्राचीन कथाओं से जुड़ा हुआ।

7. **तीनों कालों में वाक्य–**

(क) मैना ने मधुर वाणी में गाना शुरू कर दिया। (भूतकाल)

(ख) मैरा मधुर वाणी में गाना शुरू करती है। (वर्तमान काल)

(ग) मैना मधुर वाणी में गाना शुरू करेगी। (भविष्य काल)

8. **विशेषण शब्द–**
   (क) बूढ़ी
   (ख) नटखट
   (ग) दर्शनीय
   (घ) सुगंधित

9. (क) **हरि–** (कृष्ण) **:** वाक्य– भक्त हरि के भजन में मग्न हैं।
   (बंदर) **:** वाक्य–पेड़ की डाल पर एक हरि बैठा है।
   (ख) विधि– (कानून या नियम) **:** वाक्य–हमें देश की विधि का सम्मान करना चाहिए।
   (तरीका या ढंग) **:** वाक्य– भोजन बनाने की सही विधि क्या है?

10. (क) अर्थ–अत्यधिक क्रोधित होना।
   वाक्य प्रयोग– शीशा टूटने की खबर सुनकर मालिक नौकर पर 'आग-बबूला' हो गए।
   (ख) अर्थ–किसी बात का प्रचार करना या सबको बताना।
   वाक्य प्रयोग–अपनी छोटी सी उपलब्धि का उसने पूरे शहर में 'ढिंढोरा पीट' दिया।
   (ग) अर्थ–बहुत बुरी हालत में होना या अत्यधिक थक जाना।
   वाक्य प्रयोग–दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद शाम तक मजदूर की 'खस्ता सूरत' हो गई।

❑❑